लोक सभा वाद-विवाद
(हिन्दी संस्करण)

मंगलवार, 24 मार्च, 1998/3 चैत्र, 1920 (शक)
का
शुद्धि-पत्र

....

कॉलम	पंक्ति	के स्थान पर	पढ़िए
2	4	श्रीमती कमल रानी (धारम पुर)	श्रीमती कमल रानी (घाटमपुर)
	नीचे से 9	श्री अबुल हसनत खा	श्री अबुल हसनत खां
3	11	श्री अक्बर अली खांदोकर (सेरामपुर)	श्री अकबर अली खांदोकर (सेरमपुर)
	नीचे से 2	श्री पवन सिंह घाटोवर (डिब्रूगढ़)	श्री पवन सिंह घाटोवार (डिब्रूगढ़)
4	नीचे से 14	श्री रंजीब विस्वाल (जगतसिंह पुर)	श्री रंजीब बिस्वाल (जगतसिंह पुर)
5	7	श्री एस॰एस॰ पलानीमनिक्कम (तंजाबूर)	श्री एस॰एस॰ पलानीमनिक्कम (तंजावूर)
	15	श्री रनने बर्मन (बलूरघाट)	श्री रनेन बर्मन (बलूरघाट)
9	नीचे से 2	श्री अरिफ मोहम्मद खां	श्री आरिफ मोहम्मद खां
9	नीचे से 1	उठना	उठाना
10	11	श्री अरिफ मोहम्मद खां	श्री आरिफ मोहम्मद खां
37	नीचे से 21	बाटामूला	बारामूला
40	6	स्पीकार	स्पीकर

द्वादश माला, खंड 1, अंक 2

मंगलवार, 24 मार्च, 1998
3 चैत्र, 1920 (शक)

लोक सभा वाद-विवाद

(हिन्दी संस्करण)

पहला सत्र

(बारहवीं लोक सभा)

(खण्ड 1 में अंक 1 से 8 तक हैं)

लोक सभा सचिवालय
नई दिल्ली

मूल्य : पचास रुपये

सम्पादक मण्डल

श्री एस० गोपालन
महासचिव
लोक सभा

डा० अशोक कुमार पांडेय
अपर सचिव
लोक सभा सचिवालय

श्री एम०आर० खोसला
संयुक्त सचिव
लोक सभा सचिवालय

श्री सुरेन्द्र कौशिक
निदेशक
लोक सभा सचिवालय

श्री प्रकाश चन्द्र भट्ट
मुख्य सम्पादक
लोक सभा सचिवालय

श्री केवल कृष्ण
वरिष्ठ सम्पादक

श्री राम लाल गुलाटी
सम्पादक

श्री पीयूष चन्द्र दत्त
सहायक सम्पादक

श्री गोपाल सिंह चौहान
सहायक सम्पादक

---

[1](अंग्रेजी संस्करण में सम्मिलित मूल अंग्रेजी कार्यवाही और हिन्दी संस्करण में सम्मिलित मूल हिन्दी कार्यवाही ही प्रामाणिक मानी जायेगी। उनका अनुवाद प्रामाणिक नहीं माना जायेगा।

विषय-सूची

[द्वादश माला, खंड 1, पहला सत्र, 1998/1920 (शक)]

अंक 2, मंगलवार, 24 मार्च, 1998/3 चैत्र, 1920 (शक)

विषय	कालम
सदस्यों द्वारा शपथ ग्रहण	1-6
अध्यक्ष का निर्वाचन	6-7
अध्यक्ष को बधाइयां	
श्री अटल बिहारी वाजपेयी	7-12
श्री शरद पवार	12-13
श्री सोमनाथ चटर्जी	13-14
श्री पूर्णो ए० संगमा	14-15
कुमारी ममता बनर्जी	15
श्री राम विलास पासवान	16
श्री आर० मुथैया	16-17
श्री मुलायम सिंह यादव	17-18
श्री लालू प्रसाद	18-19
श्री के० येरननायडू	19-20
श्री नवीन पटनायक	20
श्री दिग्विजय सिंह	20-21
श्री इन्द्रजीत गुप्त	21-22
सरदार सुरजीत सिंह बरनाला	22
श्री मुरासोली मारन	22-25
श्री शिवराज वी० पाटील	25
श्री मधुकर सरपोतदार	25-27
श्री सनत कुमार मंडल	27
श्री पी०सी० थामस	27-28
कुमारी मायावती	28-29
श्रीमती कैलाशो देवी	29-30
श्री आर०एस० गवई	30-32
श्री जी०एम० बनातवाला	32-35
श्री वैको	35-36
श्री अमर राय प्रधान	36-37
श्री पी० चिदम्बरम	37
प्रो० सैफुद्दीन सोज	37-40
श्री के० बापीराजू	38-39
श्री एस०एस० ओवेसी	40
श्री बी०एम० मेनसिंकाई	39-41

लोक सभा

मंगलवार, 24 मार्च, 1998/3 चैत्र, 1920 (शक)

लोक सभा पूर्वाह्न 11.00 बजे समवेत हुई

[सामयिक अध्यक्ष महोदय (श्री इन्द्रजीत गुप्त) *पीठासीन हुए*]

सदस्यों द्वारा शपथ ग्रहण - *जारी*

[अनुवाद]

सामयिक अध्यक्ष महोदय : अब महासचिव महोदय उन सदस्यों के नाम पुकारेंगे जिन्होंने अभी तक शपथ ग्रहण अथवा प्रतिज्ञान नहीं किया हैं। मैं समझता हूं कुछ सदस्य हैं जिनके नाम पुकारे गए थे लेकिन वे यहां उपस्थित नहीं थे अथवा वे अभी आए नहीं हैं।

श्री सोमनाथ चटर्जी (बोलपुर) : उन्हें अन्त में बुलाया जाना चाहिए। मैं समझता हूं कि यही नियम है।

श्री पी०एम० सईद (लक्षद्वीप) : यही परम्परा रही है।

सामयिक अध्यक्ष महोदय : अब महासचिव महोदय नाम पुकारेंगें।

श्री रामपाल सिंह (डुमरियागंज)

श्री इन्द्रजीत मिश्र (खलीलाबाद)

श्री राजनारायण पासी (बाँसगांव)

श्री आदित्यनाथ (गोरखपुर)

श्री पंकज चौधरी (महाराजगंज)

श्री रामनगीना मिश्र (पडरौना)

श्री मोहन सिंह (देवरिया)

श्री हरिकेवल प्रसाद (सलेमपुर)

श्री चन्द्रशेखर (बलिया)

श्री कल्पनाथ राय (घोसी)

श्री अकबर अहमद (आजमगढ़)

श्री दरोगा प्रसाद सरोज (लालगंज)

श्री चिन्मयानन्द स्वामी (मछलीशहर)

श्री पारसनाथ यादव (जौनपुर)

डॉ० विजय सोनपुर शास्त्री (सैदपुर)

श्री ओमप्रकाश (गांजीपुर)

श्री आनन्द रत्न मौर्य (चन्दौली)

श्री शंकर प्रसाद जायसवाल (वाराणसी)

श्री रामशकल (राबर्ट्सगंज)

श्री वीरेन्द्र सिंह (मिर्जापुर)

श्री जंग बहादुर सिंह पटेल (फूलपुर)

श्री शैलेन्द्र कुमार (चैल)

डॉ० अशोक पटेल (फतेहपुर)

श्री गंगा चरण राजपूत (हमीरपुर) (उ०प्र०)

श्री राजेन्द्र अग्निहोत्री (झांसी)

श्री भानु प्रताप सिंह वर्मा (जालौन)

श्रीमती कमल रानी (घाटमपुर)

श्री श्याम बिहारी मिश्र (बिल्हौर)

श्री जगत वीर सिंह द्रोण (कानपुर)

श्रीमती सुखदा मिश्र (इटावा)

श्री प्रदीप कुमार यादव (कन्नौज)

डा० स्वामी सच्चिदानन्द हरि साक्षी (फर्रूखाबाद)

श्री बलराम सिंह यादव (मैनपुरी)

प्रो० एस०पी० सिंह बघेल (जलेसर)

डॉ० महादीपक सिंह शाक्य (एटा)

श्री प्रभूदयाल कठेरिया (फिरोजाबाद)

श्री भगवान शंकर रावत (आगरा)

श्री तेजवीर सिंह (मथुरा)

श्री किशनलाल दिलेर (हाथरस)

श्रीमती शीला गौतम (अलीगढ़)

श्री अशोक प्रधान (खुर्जा)

श्री छत्रपाल सिंह (बुलंदशहर)

श्री रमेश चन्द्र तोमर (हापुड़)

श्री अमर पाल सिंह (मेरठ)

श्री सोहनवीर सिंह (मुजफ्फरनगर)

श्री वीरेन्द्र वर्मा (कैराना)

श्री नकली सिंह (सहारनपुर)

श्री हरपाल सिंह साथी (हरिद्वार)

श्री अमर राय प्रधान (कूच बिहार)

श्री जोवांकिम बखला (अलीपुर दुआर्स)

श्रीमती मिनाति सेन (जलपाईगुड़ी)

श्री आनंद पाठक (दार्जिलिंग)

श्री सुब्रत मुखर्जी (रायगंज)

श्री ए०बी०ए० गनी खां चौधरी (मालदा)

श्री अबुल हसनत खा (जंगीपुर)

श्री मोइनुल हसन (मुर्शिदाबाद)

श्री प्रमथेस मुखर्जी (बरहामपुर) (प० बंगाल)

श्री अजय मुखोपाध्याय (कृष्नगर)

डा० असीम बाला (नवद्वीप)

डा० रणजीत कुमार पांजा (बारसाट)

श्री अजय चक्रवर्ती (बसीरहाट)

श्री सनत कुमार मंडल (जयनगर)

प्रो० आर०आर० प्रमाणिक (मथुरापुर)

मध्याह्न 12.00 बजे

श्री समीक लाहिड़ी (डायमंड हार्बर)

श्रीमती कृष्णा बोस (जादवपुर)

श्री तरित वरण तोपदार (बैरकपुर)

श्री तपन सिकदर (दमदम)

श्री सुदीप बंद्योपाध्याय (कलकत्ता उत्तर-पश्चिम)

श्री अजित कुमार पांजा (कलकत्ता उत्तर-पूर्व)

कुमारी ममता बनर्जी (कलकत्ता दक्षिण)

डा० विक्रम सरकार (हावड़ा)

श्री हन्नान मोल्लाह (उलूबेरिया)

श्री अकबर अली खांदोकर (सेरामपुर)

श्री रूपचन्द्र पाल (हुगली)

श्री अनिल बसु (आरामबाग)

श्रीमती गीता मुखर्जी (पंसकुरा)

श्री लक्ष्मण चन्द्र सेठ (तामलुक)

श्री सुधीर गिरि (कोन्टाई)

श्री रूपचन्द मुर्मू (झाड़ग्राम)

श्री बसुदेव आचार्य (बांकुरा)

श्रीमती संध्या बौरी (विष्णुपुर)

श्री सुनील खां (दुर्गापुर)

श्री विकास चौधरी (आसनसोल)

श्री निखिलानन्द सर (बर्दवान)

श्री महबूब जहेदी (कटवा)

श्री सोमनाथ चटर्जी (बोलपुर)

डा० राम चन्द्र डोम (बीरभूम)

अध्यक्ष महोदय : अब, महासचिव महोदय उन सदस्यों के नाम पुकारेंगे जो पूर्व में शपथ अथवा प्रतिज्ञान नहीं ले सके थे।

सदस्यों द्वारा शपथ ग्रहण — *जारी*

श्री के० येरननायडु (श्रीकाकुलम)

श्री एस० विजय रामा राजू (पार्वतीपुरम)

श्री यू०वी० कृष्णमराजु (काकीनाडा)

श्री जी०एम०सी० बालयोगी (अमालापुरम)

श्री के० बापीराजू (नरसापुर)

श्री आर० साम्बासिवा राव (गुंटूर)

श्री वेंकटरामी अनन्त रेड्डी (अनन्तपुर)

श्री जी० गंगा रेड्डी (निजामाबाद)

डा० जयन्त रंगपी (स्वशासी जिला - असम)

श्री पवन सिंह घाटोवर (डिब्रूगढ़)

श्री प्रभुनाथ सिंह (महाराजगंज)

श्री तसलीमुद्दीन (किशनगंज)

श्री सुशील कुमार सिंह (औरंगाबाद) (बिहार)

श्री तारिक अनवर (कटिहार)

श्री धीरेन्द्र अग्रवाल (चतरा)

श्री विजय गोयल (चांदनी चौक)

श्री चन्द्रेश पटेल (जामनगर)

श्री मुफ्ती मोहम्मद सईद (अनन्तनाग)

श्री रामचन्द्र वीरप्पा (बीदर)

श्री के०सी० कोंडय्या (बेल्लारी)

श्री वी० धनंजय कुमार (मंगलौर)

श्री जयराम आई०एम० शेट्टी (उडुपी)

श्री विजय संकेश्वर (धारवाड़ उत्तर)

श्री रमेश सी० जिगाजिनागी (चिक्कोडी)

श्री अजय कुमार एस० सरनायक (बागल कोट)

प्रो० पी०जे० कुरियन (मवेलीकारा)

डा० राम लखन सिंह (भिण्ड)

श्री माधवराव सिन्धिया (ग्वालियर)

श्री परस राम भारद्वाज (सारंगढ़)

श्री लक्ष्मण सिंह (राजगढ़)

श्री शिवराज सिंह चौहान (विदिशा)

श्री मोहन रावले (मुंबई) (दक्षिण-मध्य)

श्री आर०एस० गवई (अमरावती)

श्री विलास मुत्तेमवार (नागपुर)

श्री सुरेश वरपुडकर (परभणी)

श्री संदीपान थोरात (पंढरपुर)

श्री रंजीब विस्वाल (जगतसिंह पुर)

श्री एस० अरूमुगम (पांडिचेरी)

श्री सतनाम सिंह कैंथ (फिल्लौर)

श्रीमती सतविन्दर कौर धालीवाल (रोपड़)

अपराह्न 1.00 बजे

श्री बलराम जाखड़ (बीकानेर)

श्री नरेन्द्र बुडानिया (चूरू)

श्री राजेश पायलट (दौसा)

श्रीमती प्रभा ठाकुर (अजमेर)

श्री द्वारका प्रसाद बैरवा (टोंक)

श्री महेन्द्रजीत सिंह मालविया (बांसवाड़ा)

श्री उदय लाल आर्जना (चित्तौड़गढ़)

कर्नल सोनाराम चौधरी (बाड़मेर)

श्री अशोक गहलोत (जोधपुर)

श्री भीम दाहाल (सिक्किम)

श्री सी० कुप्पुस्वामी (मद्रास उत्तर)

श्री मुरासोली मारन (मद्रास मध्य)

श्री टी०आर० बालू (मद्रास दक्षिण)

श्री डी० वेणुगोपाल (तिरुपत्तूर)

डा० सुब्रह्मण्यम स्वामी (मदुरै)

श्री एस०एस० पलानीमनिक्कम (तंजाबूर)

मेजर जनरल भुवन चन्द्र खण्डूरी ए०वी०एम०एम० (गढ़वाल)

श्री मुलायम सिंह यादव (संभल)

श्री सलीम इकबाल शेरवानी (बदायूं)

श्री राघवेन्द्र सिंह (शाहाबाद)

श्री मित्रसेन यादव (फैजाबाद)

श्री रिजवान जहीर खां (बलरामपुर)

श्री रमेश चन्द्र द्विवेदी (बांदा)

श्री रनने बर्मन (बलूरघाट)

सामयिक अध्यक्ष महोदय : श्री बीर सिंह महतो ने मुझे सूचित किया है कि उनकी टांग की हड्डी टूट जाने के कारण वे चल नहीं सकते है, वे सभा में एक पहियेदार कुर्सी में बैठे हुए हैं, उन्होंने अनुरोध किया है कि उनकी शारीरिक अक्षमता को ध्यान में रखते हुए उन्हें अपने स्थान पर ही शपथ ग्रहण करने की अनुमति दी जाए। मैं उनको यह अनुमति दे रहा हूं।

श्री बीर सिंह महतो (पुरूलिया)

श्री कमल नाथ (छिन्दवाड़ा)

सामयिक अध्यक्ष महोदय : क्या सभा में कोई ऐसा सदस्य उपस्थित है जिसने शपथ ग्रहण या प्रतिज्ञान नहीं किया हो?

मेरे विचार से ऐसा कोई सदस्य नहीं है। यहां उपस्थित सभी सदस्यों ने शपथ ग्रहण या प्रतिज्ञान कर लिया है।

अब हम कार्य की अगली मद लेते हैं जो कि लोक सभा के अध्यक्ष का निर्वाचन है। इसलिए मैं निर्णय करता हूं और घोषणा करता हूं कि इस मद को अपराहन 4.00 बजे लिया जाएगा।

अब सभा अपराह्न 4.00 बजे तक के लिए स्थगित होती है।

अपराह्न 1.25 बजे

तत्पश्चात लाक सभा अपराह्न चार बजे तक के लिए स्थगित होती हुई।

अपराह्न 4.00 बजे

लोक सभा अपराह्न चार बजे पुन: समवेत हुई

[सामयिक अध्यक्ष महोदय *पीठासीन हुए***]**

[अनुवाद]

सामयिक अध्यक्ष महोदय : अब महासचिव महोदय उन सदस्यों के नाम पुकारेगें जिन्होंने शपथ ग्रहण करनी है।

श्री एस० गंगाधर (हिन्दूपुर)

अपराह्न 4.03 बजे

[अनुवाद]

अध्यक्ष का निर्वाचन

सामयिक अध्यक्ष महोदय : अब हम कार्य की अगली मद लेते हैं, जो कि लोक सभा के अध्यक्ष का निर्वाचन है।

हमें उनके प्रस्ताव प्राप्त हुए है। हमें 18 प्रस्तावों की सूचनाएं प्राप्त हुई है, क्या इन सभी प्रस्तावों को प्रस्तुत किया जा रहा है? हम ऐसा मानते है कि इन प्रस्तावों को प्रस्तुत करने वाले सदस्य इन प्रस्तावों को प्रस्तुत करना चाहते हैं। यदि कोई सदस्य अपना प्रस्ताव प्रस्तुत करना नही चाहता हो तो वह ऐसा कह सकता है।

श्री सी०एच० विद्यासागर राव (करीमनगर) : महोदय मैं अपने प्रस्ताव की सूचना को वापस लेता हूं, जो आज की कार्य सूची में मद संख्या 15 पर सूचीबद्ध है। मैं अपना प्रस्ताव प्रस्तुत नहीं कर रहा हूं।

सामयिक अध्यक्ष महोदय : ठीक है। श्री चेन्नामानेनी विद्यासागर राव, जिनके नाम पर प्रस्ताव संख्या 15 है, ने बताया है कि वे अपना प्रस्ताव प्रस्तुत नहीं कर रहे हैं।

श्रीमती कैलाशो देवी (कुरूक्षेत्र) महोदय, मैं भी अपना प्रस्ताव प्रस्तुत नहीं कर रही हूं जो आज की कार्य-सूची में मद संख्या 14 सूचीबद्ध है।

सामयिक अध्यक्ष महोदय : ठीक है। अनेक एक जैसे प्रस्ताव हैं।

इसलिए मैं अब श्री शरद पवार को अपना प्रस्ताव प्रस्तुत करने के लिए कह रहा हूं।

श्री शरद पवार (बारामती) : मैं प्रस्ताव करता हूं :

"कि श्री पूर्णो अगितोक संगमा, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

[हिन्दी]

श्री पी० शिव शंकर (तेनाली) : मैं प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

[अनुवाद]

सामयिक अध्यक्ष महोदय : प्रश्न यह है :

"कि श्री पूर्णो अगितोक संगमा, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

प्रस्ताव अस्वीकृत हुआ।

सामयिक अध्यक्ष महोदय : क्रम संख्या 2 से 14, 16 और और 18 पर सूचीबद्ध प्रस्ताव एक जैसे है, इसलिए चूंकि क्रम संख्या 2 पर सूचीबद्ध प्रस्ताव अस्वीकृत हुआ है, अत: क्रम संख्या 3 से 14, 16 और 18 को सभा के मतदान के लिए नहीं रखा जा रहा है। क्रम संख्या 15 पर दर्शाया गया प्रस्ताव प्रस्तुत नहीं किया जा रहा हैं इसका तात्पर्य है हमारे समक्ष केवल क्रम संख्या 17 पर दर्शाया गया प्रस्ताव ही बचा है जो श्री अटल बिहारी वाजपेयी के नाम पर हैं इसलिए मैं अब श्री वाजपेयी को अपना प्रस्ताव प्रस्तुत करने के लिए कह रहा हूं।

प्रधान मंत्री (श्री अटल बिहारी वाजपेयी) : मैं प्रस्ताव करता हूं :

"कि श्री गन्ति मोहनचन्द्र बालयोगी, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

[हिन्दी]

गृह मंत्री (श्री लालकृष्ण आडवाणी) : मैं प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

[अनुवाद]

सामयिक अध्यक्ष महोदय : प्रश्न यह है :

"कि श्री गन्ति मोहनचन्द्र बालयोगी, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

सामयिक अध्यक्ष महोदय : प्रस्ताव स्वीकृत हुआ और श्री गन्ति मोहनचन्द्र बालयोगी को इस सभा का अध्यक्ष निर्वाचित घोषित किया जाता है। मैं उन्हें अध्यक्ष का आसन ग्रहण करने के लिए आमंत्रित करता हूं।

सदन के नेता श्री अटल बिहारी वाजपेयी और विपक्ष के नेता श्री शरद पवार श्री गन्ति मोहनचन्द्र बालयोगी को अध्यक्षपीठ तक ले गए।

[**अध्यक्ष महोदय (श्री जी०एम०सी० बालयोगी)** *पीठासीन हुए*]

अपराह्न 4.09 बजे

अध्यक्ष को बधाइयां

[हिन्दी]

प्रधान मंत्री (श्री अटल बिहारी वाजपेयी) : अध्यक्ष महोदय, लोक सभा के अध्यक्ष पद पर निर्वाचित किए जाने के लिए मैं आपको हृदय से बधाई देता हूं और आपका अभिनन्दन करता हूं। आप लोक सभा के लिए नए नहीं हैं। 10वीं लोक सभा के सदस्य के रूप में हम आपकी क्षमता और आपके योगदान से परिचित हैं। ग्रामीण विकास और कृषि में आपकी विशेष रूचि रही है। और इन विषयों पर आपके भाषण पिछली लोक सभा में हमने सुने थे। लोक सभा से पहले आप जिला परिषद के माध्यम से अपने क्षेत्र और समाज की सेवा करते रहे हैं।

आप कानून के विद्यार्थी रहे हैं। गरीबों को, दलितों को एडवोकेट के नाते आपके लैवल पर सहायता मिलती रही है। आज जब देश स्वतंत्रता की 50वीं वर्षगांठ मना रहा है तो यह बड़े गौरव की बात है कि अनुसूचित जाति का एक सम्माननीय सदस्य लोक सभा अध्यक्ष के पद को अलंकृत कर रहा है। यह बदलते हुए वक्त का सूचक है। यह युग परिवर्तन का द्योतक है।

अध्यक्ष महोदय, आपने बड़ा कठिन कार्य सम्भाला है और यह कार्य बड़े कठिन समय में सम्भाला है। जनता ने अपना आदेश दे दिया। इस सदन की जो गठन के बाद शक्ल बनी है, वह आपके काम को और भी मुश्किल बनाती है, लेकिन आप ऐसे आसन पर बैठे हैं जिसे सरदार विट्ठल भाई पटेल ने सुशोभित किया था, श्री मावलंकर इस सदन का संचालन कर चुके हैं। इस सदन के दो पूर्व अध्यक्ष श्री शिवराज पाटिल और श्री संगमा इस समय सदन में उपस्थित हैं।...*(व्यवधान)* अध्यक्ष महोदय, अध्यक्षपीठ में, अध्यक्ष में आसन में कुछ ऐसी गुणवत्ता है कि...*(व्यवधान)*

कुमारी मायावती (अकबरपुर) : कि आप ही यदि उनका दुरुपयोग करें तो...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कुमारी मायावती जी कृपया बैठ जाइए।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : इस आसन पर बैठने वाले को अपने दायित्व का निर्वाह करने के लिए भेजा जाता है।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया आप सभी बैठ जाइए।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

एक माननीय सदस्य : एक दलित महिला बोल रही हैं, सुन लीजिए। *(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : हम सभी जो पुरानी पद्धतियां हैं,... *(व्यवधान)* विक्रमादित्य के सिंहासन पर बैठकर...*(व्यवधान)* अपनी कुशलता दिखाई थी।...*(व्यवधान)*

एक माननीय सदस्य : दलितों की दुहाई दे रहे हैं तो दलित महिला की बात सुन लीजिए अटल जी।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाइए।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : यह सदन का एक कठिन काम को सरल बना सकता है अगर यह सदन नियमों के अनुसार चले। हम विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र होने का दावा करते हैं और यह दावा सही भी है लेकिन...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : यह अच्छी बात नहीं है। आप लोग बैठ जाइए।

(व्यवधान)

श्री आरिफ मोहम्मंद खां (बहराइच) : प्रधान मंत्री जी सदन की परिपाटियों से भली-भांति परिचित हैं। माननीय प्रधान मंत्री जी एक मिनट के लिए भी बोलने का मौका नहीं देते हैं।...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : श्री आरिफ मोहम्मद खां, कृपया बैठ जाइए। आपको बोलने का मौका मिलेगा।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाइए।

[हिन्दी]

श्री मुकुल वासनिक (बुलढाना) : अध्यक्ष महोदय, यह एक दलित महिला की आवाज दबाने की कोशिश होगी। *(व्यवधान)*

[अनुवाद]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : महोदय, मुझे अपनी बात जारी रखने दीजिए।

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : प्राइम मिनिस्टर साहब बात कर रहे हैं, आप बैठिये।

(व्यवधान)

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : आपको बोलने की अनुमति दी जाएगी।

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, मैं आपको बधाई देने के लिए खड़ा हुआ हूं। यह बधाई का अवसर टोका-टाकी का अवसर नहीं है. टोका-टाकी के बहुत अवसर मिलेंगे। *(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : प्रधान मंत्री जी को अपनी बात जारी रखने दें।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : नहीं, यह ठीक नहीं है।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : कृपया अपना स्थान ग्रहण कीजिए। *(व्यवधान)*

[अनुवाद]

श्री आरिफ मोहम्मद खां : महोदय, वे न केवल प्रधान मंत्री है बल्कि एक अनुभवी सांसद भी हैं। *(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : प्रधान मंत्री को अपनी बात जारी रखने दें। कृपया बैठ जाइए।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : आपको भी मौका देंगे। कृपया आप बैठ जाइए।

(व्यवधान)

[अनुवाद]

आपको बोलने का मौका दिया जाएगा।

(व्यवधान)

श्री आरिफ मोहम्मद खां : महोदय, मैं औचित्य का एक का प्रश्न उठना चाहता हूं।

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : प्राइम मिनिस्टर साहब बोल रहे हैं, हम आपको भी मौका देंगे।

(व्यवधान)

[अनुवाद].

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, मुझे अपनी बात पूरी करने दीजिए। *(व्यवधान)*

[हिन्दी]

यह क्या भाषण दे रहे हैं? *(व्यवधान)*

[अनुवाद]

श्री आरिफ मोहम्मद खां : प्रधान मंत्री को इतना कृपालु होना ही चाहिए कि बसपा के नेता को बोलने की अनुमति दें क्योंकि वह महिला अनुसूचित जाति से भी संबंधित है। महोदय हम स्वतंत्रता के पचासवें वर्ष में हैं। क्या वे बसपा की नेता, जो अनुसूचित जाति से संबंधित हैं को अपनी बात कहने की अनुमति नहीं देंगे उन्हें उन पर कुछ कृपा करनी चाहिए। *(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : यह आपको शोभा नहीं देता क्योंकि प्रधान मंत्री जी बोल रहे हैं।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : अब प्रधान मंत्री जी बोल रहे हैं। इसलिए व्यवधान डालना ठीक नहीं है।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : कृपया शांत हो जाइए। प्रधान मंत्री जी बोलने के लिए खड़े हैं।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : महोदया, कृपया बैठ जाइए। यह ठीक नहीं है।

(व्यवधान)

श्री अजीत जोगी (रायगढ़) : महोदय, उन्हें दलित महिला सदस्य की बात सुनने दें।

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : प्राइम मिनिस्टर साहब बोल रहे हैं, आप बैठिये

(व्यवधान)

श्री विलास मुत्तेमवार (नागपुर) : आप उनको सुन तो लीजिए *(व्यवधान)*

श्री मुकुल वासनिक (बुलढाना) : अध्यक्ष महोदय, क्या एक दलित महिला को बोलने नहीं दिया जायेगा जो गरीबों की दुहाई देने की कोशिश कर रही है। *(व्यवधान)* अध्यक्ष महोदय, ये दलितों की दुहाई देते हैं और दलित सदस्य को बोलने का समय नहीं दे रहे हैं। *(व्यवधान)*

श्री अजीत जोगी : अध्यक्ष महोदय, हम इसलिए कह रहे हैं कि दलित महिला को बोलने का समय दीजिए। *(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाइए।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : प्रधानमंत्री जी बोलने के लिए खड़े हैं।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

कुमारी ममता बनर्जी (कलकत्ता दक्षिण) : अध्यक्ष महोदय, ये लोग शोर क्यों कर रहे हैं? ऐसे अवसर पर ऐसी बातें नहीं कही जाती हैं। ...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : आप कृपया बैठ जाइए। सबको बोलने का मौका दिया जाएगा। प्रधान मंत्री बोल रहे हैं।

(व्यवधान)

सूचना और प्रसारण मंत्री (श्रीमती सुषमा स्वराज) : अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्या को मालूम होना चाहिए कि ऐसे अवसर पर इस प्रकार से व्यवधान खड़ा नहीं करते हैं। वे अपनी पार्टी की नेता हैं, उनको जब बोलने का अवसर मिले, तब वे अपनी बात कह सकती हैं। *(व्यवधान)*

श्री सत्यपाल जैन (चंडीगढ़) : सदन में प्रतिपक्ष के नेता मौजूद हैं। मेरा उनसे आग्रह है कि वे इनको चुप कराएं। यदि इस प्रकार से ये प्रधान मंत्री महोदय को बोलने से रोकने का प्रयास करेंगे, तो हम उन्हें बोलने की अनुमति नहीं देंगे। *(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाइए। प्रधान मंत्री महोदय बोल रहे हैं। कृपया बैठ जाइए।

(व्यवधान)

श्री आरिफ़ मोहम्मद खां : अध्यक्ष महोदय, मेरा आग्रह है कि आप दलित महिला की बात सुन लीजिए। *(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : इस प्रकार से बीच में बोलना अच्छा नहीं है। कृपया आप बैठ जाइए।

श्रीमती सुषमा स्वराज : अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य परिपाटी की बात कह रहे हैं, उन्हें मालूम होना चाहिए कि यह अवसर उनके बोलने का नहीं हैं। *(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : जब प्रधान मंत्री जी बोल रहे है, तो व्यवधान डालना ठीक नहीं है। कृपया बैठ जाइए।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री आरिफ मोहम्मद खां : अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे सि. इतना ही कह रहा हूं कि माननीय प्रधान मंत्री एक मिनट के लिए बैठ जाएं और दलित महिला की बात सुन लें। *(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : श्री आरिफ मोहम्मद खां, मैंने आपको बोलने की अनुमति नहीं दी है।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, यदि अध्यक्ष को बधाई देना भी अपराध है, तो मैं जरूर अपराधी हूं। *(व्यवधान)*

अपराह्न 4.29 बजे

तत्पश्चात् कुमारी मायावती तथा कुछ अन्य माननीय सदस्य सभा-भवन से बाहर चले गए।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, लोक सभा के चुनाव के बाद हम पहली बार आज यहां एकत्र हुए हैं और मैं तो प्रतिपक्ष को धन्यवाद देना चाहता था विशेषकर प्रतिपक्ष के नेता श्री शरद पवार जी को, जिन्होंने आपका सर्वानुमति से निर्णय कराने में सहयोग दिया। *(व्यवधान)* लोकतंत्र में सरकारें बदलेंगी। कल मैं प्रतिपक्ष में बैठा था। 40 साल में, छोटे से कालखंड को छोड़कर मैंने प्रतिपक्ष से देश की सेवा की है। सदन में योगदान दिया हैं जनता का निर्णय शिरोधार्य होना चाहिए। *(व्यवधान)* मुट्ठी भर सदस्यों को इस सदन में सारे काम-काज को अस्त-व्यस्त करने का अधिकार नहीं होना चाहिए। ऐसा मौका नहीं मिलना चाहिए।

अध्यक्ष महोदय, मैं यह कहने जा रहा था कि यह सदन आज की कठिनाइयों को कम कर सकता है, अगर सदन नियमों के अनुसार चले, अगर सदस्य अपने आचरण, अपने वक्तव्य में गारिमा का पालन करें। *(व्यवधान)* आज सारी दुनिया हमारे सदन की ओर देख रही है। जो देश अभी-अभी आजाद हुए हैं और जिन देशों ने अभी लोकतंत्र अपनाया है, वे हमारे यहां लोकतंत्र की शिक्षा लेने के लिए, पाठ पढ़ने के लिए आते हैं। पता नहीं हम कौन सा पाठ उन्हें पढ़ाना चाहते हैं। आज जो कुछ हुआ है, वह पाठ पढ़कर यदि वे अपने देश में गये, तो फिर लोकतंत्र का भविष्य अंधकार में पड़ सकता है। *(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : यह अच्छी बात नहीं है।

(व्यवधान)

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, मैं एक बार फिर आपको बधाई देता हूं। आपका अभिनंदन करता हूं और आपको विश्वास दिलाता हूं कि आप सदन के सभी सदस्यों के अधिकारों की रक्षा के काम में हमारा पूर्ण सहयोग पायेंगे।

श्री शरद पवार (बारामती) : अध्यक्ष महोदय, आपका अभिनंदन करने के लिए मैं यहां खड़ा हुआ हूं। संसदीय लोकतंत्र का यह सर्वोच्च मंदिर है और इसके नेतृत्व की जिम्मेदारी आज आपके कंधों पर पड़ी हैं इस देश की सभी विधान सभायें, विधान परिषदें हमेशा इस संसद की तरफ से मार्गनिर्देशन लेती हैं और इसलिए आपके ऊपर बड़ी जिम्मेदारी है। भारतीय लोकतंत्र में, संसदीय लोकतंत्र में अध्यक्ष पद सबसे महत्वपूर्ण पद है। इस देश में उसकी इज्जत है। दुनिया के सबसे बड़े प्रजातंत्रीय देश के रूप में भारत की तरफ दुनिया के लोग देखते हैं, पूछते हैं। दुनिया में बहुत से पार्लियामैंट्री इंस्टीट्यूशन्स हैं, उन सबमें भारत की लोक सभा के अध्यक्ष का एक विशेष स्थान है। कॉमनवैल्थ पार्लियामैंट्री एसोसियेशन हो या अन्य दुनिया के पार्लियामैंट्री संगठन हों, सभी में भारत के लोक सभा अध्यक्ष का एक महत्वपूर्ण स्थान है और यह जिम्मेदारी पूरा करने का काम अब आपको करना पड़ेगा। सदन के नेता ने जो कहा है, उनसे मैं सहमत हूं कि इस पद पर बहुत मान्यवर व्यक्तियों ने, इस देश के संसदीय लोकतंत्र को मजबूत करने के लिए, बहुत

बड़ा योगदान दिया है जिनमें मावलंकर जी का उल्लेख हो सकता है। एक अय्यंगर जी थे। अब तक जिन्होंने जिम्मेदारी संभाली थी, वे श्री पी०ए० संगमा थे। उनका यहां उल्लेख करने में मुझे गौरव लगता है। आज की सदन की स्थिति अलग है। इस देश की जनता ने जिस तरह का मैनडेट दिया और सदन की जो रचना हुई है, मुझे लगता है कि इसके बाद हम सबके ऊपर बहुत बड़ी जिम्मेदारी आई है सदन की गरिमा रखनी हो, अन्य संसदीय संस्थाओं का मार्गदर्शन करने की बात हो, यहां से बहुत बड़ा काम करने का संकट हम सबके सामने आया है। आप खुद दसवीं लोक सभा में सदस्य थे और इसलिए यह लोक सभा आपके लिए कोई नई नहीं है। आपने अपने सामाजिक जीवन का कारोबार पंचायत राज से शुरू किया, जिला परिषद की जिम्मेदारी आपने संभाली, सदन में आए और पिछले कई सालों तक आपने आंध्र प्रदेश में वहां के विधान सभा के सदस्य के नाते और वहां की सरकार के मंत्री के नाते जिम्मेदारी संभाली थी। आप समाज के पिछड़े हुए वर्ग से आते हैं और इसलिए जो समाज का पिछड़ा वर्ग है, उनकी जो परिस्थिति है, वह आप बहुत अच्छी तरह से जानते हैं। आप विधिक हैं और मुझे विश्वास है कि जिस तरह सामाजिक जीवन में आपने पिछले कई सालों में काम किया है, उसका अनुभव आपको यह सदन चलाने में मददगार होगा।

इस चुनाव के बाद की परिस्थिति देखने के बाद हमें यह मानना होगा कि इस देश में साझा सरकार चलाने की परिस्थिति पैदा हुई है। अलग-अलग प्रकार की पार्टियों को मिलकर काम करने की परिस्थिति पैदा हुई है और सहमति की नीति को स्वीकार करना हमारा फर्ज हो गया है मुझे खुशी होती यदि हम यहां सर्वसम्मति से निर्णय लेने की प्रक्रिया शुरू कर सकते। मगर मैं उस पर ज्यादा कुछ बोलना नहीं चाहता। यह जो जिम्मेदारी आपके कंधों पर पड़ी है, मुझे विश्वास है कि आप इस सदन की गरिमा बढ़ाने और प्रजातंत्र को मजबूत करने में कामयाब होंगे।

मैं अपनी पार्टी की तरफ से, अपने सब साथियों की तरफ से आपको विश्वास दिलाना चाहता हूं कि सदन का कामकाज अच्छी तरह से चलाने में हम सबका आपको पूरा-पूरा योगदान रहेगा। आपको यह जरूर देखना होगा, इस सदन की परिस्थिति देखने के बाद, जो विपक्ष में बैठे हुए हों या शासन में बैठे हुए हों, उनकी संख्या कुछ भी हो, लेकिन सदस्यों के अधिकार के बारे में जो सूचना सामने आई है, उसकी प्रतिष्ठा बनाए रखने का काम आपको यहां करना होगा और इस बारे में मेरा और मेरे साथियों का आपको सहयोग रहेगा।

यह कहकर मैं पुन: आपका अभिनन्दन करता हूं।

[अनुवाद]

श्री सोमनाथ चटर्जी (बोलपुर) : अध्यक्ष महोदय, अपने दल की तथा अपनी तरफ मैं आपको हमारे महान गणतंत्र के सर्वोच्च पद पर चुने जाने के लिए हार्दिक बधाई देता हूं। जैसाकि सदन के नेता ने उल्लेख किया है, यह बहुत महत्वपूर्ण बात है कि आज एक दलित इस उच्च पद को सुशोभित कर रहा है। हमें पूरा विश्वास है कि आंध्र प्रदेश विधान सभा सहित विभिन्न संगठनों में अपने अनुभव के आधार पर आप अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह बहुत अच्छी तरह से कर सकने में समर्थ होंगे। हम आपको पूरा सहयोग देंगे।

अध्यक्ष महोदय, अब आप किसी दल से नहीं बल्कि इस सदन से संबंधित हैं। तब आप इस सदन के तथा इसके सदस्यों के अधिकारों के संरक्षक हैं। देश की निगाहे इस समय पर लगी हैं, जहां अनेक समस्याओं का समाधान होना है। लोगों ने अनेक समस्याओं के समाधान का कार्य हमें सौंपा है।

महोदय, मुझे पूरा विश्वास है कि आप सबसे समदूरी बनाए रखेंगे जैसाकि हमारे मित्र, आंध्र प्रदेश के मुख्य मंत्री जी ने आश्वासन दिया है।

मैं आपका सम्मान करके ही अपना भाषण समाप्त नहीं कर सकता जब तक कि मैं आपके पूर्व पदाधिकारी द्वारा अपने कर्त्तव्यों और कार्यों के निर्वाह के तरीके की प्रशंसा नहीं कर लेता। उन्होंने अध्यक्ष के रूप में अपने आचरण का अच्छा दृष्टांत प्रस्तुत किया है। मैं श्री पी०ए० संगमा जी की प्रशंसा करता हूं। मैं समझता हूं कि वे यहां उपस्थित हैं। उन्हें इस सदन के सक्षमतम अध्यक्षों में से जाना जाना चाहिए। *(व्यवधान)* मुझे इस सदन का अच्छा अनुभव है इसलिए मैं यह बात विश्वास के साथ कह सकता हूं। जिस तरीके से श्री सांगमा जी ने अध्यक्ष के रूप में इस सदन का विशेष सत्र आयोजित किया था उससे हमारे गणतंत्र और संविधान की मौलिकता के प्रति उनकी वचनबद्धता झलकती है। हम उस सत्र के अंत में एकमत से स्वीकार किए गए संकल्प के प्रति अपनी वचनबद्धता पुन: व्यक्त करते हैं। आने वाले दिनों में हमें यह देखना है कि यह किसी सीमा तक कायम रहता है।

हमें खुशी है कि आपका चयन इस पद के लिए हुआ है। मैं चाहता था कि इस पद पर चयन आम सहमति से होना चाहिए था, जैसाकि विपक्ष के नेता ने कहा है। परन्तु ऐसा नहीं हुआ परन्तु इसे राजनीति की बेदी पर चढ़ा दिया गया। फिर भी हम आपका पूरा समर्थन करते हैं। आपको हमारा पूरा सहयोग मिलेगा। मैं इस महान संस्था के अध्यक्ष के रूप में आपके उज्जवल भविष्य की कामना करता हूं।

श्री पूर्णो ए० संगमा (तुरा) : अध्यक्ष महोदय, यह केवल प्रजातंत्र में ही संभव है कि नेताओं का नेता बिल्कुल अप्रत्याशित से भी आ सकता। इस सदन के नेतृत्व तथा निर्देशन के लिए आपका चुनाव यह साबित करता है कि हमारा प्रजातंत्र सही मायने में प्रजातंत्र है।

मैं आपको हार्दिक बधाई देता हूं। मेरा हमेशा यह विश्वास रहा है कि अगर आंतरिक शांति, प्रजातंत्र और जनता के कल्याण के लिए अपने देश का भविष्य सुरक्षित करना है, तो हमें अपने युवाओं की आशा बांधनी चाहिए। महोदय, आप युवा हैं और मैं आशा करता हूं कि आपका चुनाव हमारे देश के युवाओं को सही संकेत देगा।

जिस पद पर आपका चुनाव हुआ है उसके लिए अत्यधिक बुद्धिमता की आवश्यकता है।

'बालयोगी' शब्द का शाब्दिक अर्थ युवा संत है। संत महान ज्ञान वाले व्यक्ति होते हैं। बुजुर्ग व्यक्तियों को ज्ञान अनुभव से मिलता है। युवाओं को ज्ञान उनके अंतर्ज्ञान, सचेत मास्तिष्क और हृदय से आता है। मुझे आशा है कि आप अधिकतर अपने युवा अंतर्ज्ञान तथा बौद्धिक और आन्तरिक ज्ञान से कार्य करेंगे। आपके नाम के अनुसार, आप 'मोहन चंद्र' भी हैं जिसका शाब्दिक अर्थ भी 'प्यारा चांद' है। चंद्र स्वभाव की शीतलता इस सदन को भी मिलेगी ।

आप निचले स्तर से उठकर एकदम इस लोकप्रिय सदन के उच्च पद पर पहुंचे हैं। मुझे आशा है कि आपकी छवि और निर्णय निचले स्तर पर मिले इस अनुभव से प्राप्त ज्ञान से भी प्रभावित होंगे।

इस सदन की इस कुर्सी को 1950 के दशक के अंत में तथा 1960 के दशक के आरम्भ में तेलुगु जगत के महान सपूत स्वर्गीय एम०ए० अयंगर सुशोभित कर चुके हैं, जो तत्कालीन मद्रास राज्य के तिरूपति संसदीय क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते थे। इस सदन के प्रबंधन में स्वर्गीय अयंगर का व्यक्तित्व और तिरूपति भगवान वेंकटेश्वर का आशीर्वाद आपका मार्गनिदेश करेंगे।

[श्री पूर्णो ए० संगमा]

इसी अवसर पर मैं ग्यारहवीं लोक सभा को अध्यक्ष पद की गरिमा को बनाए रखने के लिए गए प्रयासों में सभी वर्गों के सहयोग की सराहना करता हूं। मैं सदन के पुराने और नए सभी सदस्यों का स्वागत करता हूं और उन्हें शुभकमनाएं देता हूं।

[हिन्दी]

कुमारी ममता बनर्जी : अध्यक्ष महोदय, मैं तृणमूल कांग्रेस की ओर से आपको बधाई देना चाहती हूं। मैं शरद पवार जी को भी बधाई देना चाहती हूं। अटल बिहारी वाजपेयी जी ने जब आपका नाम प्रस्तावित किया और अपना भाषण शुरू किया तो उस समय जो वातावरण यहां बना, मेरी दृष्टि में वह हाउस की परम्परा के अनुसार उचित नहीं था। स्पीकर इलेक्शन के बाद हमारे हाउस का डैकोरम है, हमारी परम्परा है. . .(व्यवधान) मुझे अपनी बात कहने दें।

[अनुवाद]

यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण बात है। कृपया पहले जो मैं कह रही हूं मेरी बात सुनिए। मैं ने केवल सदन के नेता को बल्कि इस सदन के विपक्ष के नेता श्री सोमनाथ चटर्जी और श्री संगमा को भी बधाई दे रही हूं। *(व्यवधान)*

अब जबकि हम चर्चा में भाग ले रहे हैं, हमें शिष्टाचार बनाए रखना चाहिए। माननीय अध्यक्ष के चुनाव के बाद प्रत्येक व्यक्ति को उन्हें बधाई देनी चाहिए।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी, श्री सोमनाथ चटर्जी और श्री संगमा ने उन्हें बधाई दी है। आज हम सबको उन्हें बधाई देनी चाहिए। जब डा० बलराम जाखड़ इस सदन के अध्यक्ष के रूप में चुने गए थे, तब मैंने अपनी आंखों से देखा था कि सभी ने उन्हें बधाई दी थी। मैंने श्री शिवराज पाटिल को इस सदन के अध्यक्ष के रूप में चुने जाते हुए देखा है। मैंने श्री संगमा को इस सदन के अध्यक्ष के रूप में चुने जाते हुए देखा है। हमें अपने सभी भूतपूर्व अध्यक्षों का भी आभार व्यक्त करना चाहिए। उन्होंने इस देश की लोकतंत्रात्मक प्रणाली को बनाए रखने के लिए बहुत कार्य किया हैं हम उन सब के आभारी हैं। इसके साथ ही सरकारी पक्ष की ओर से, मैं आप सबसे अनुरोध करती हूं कि आप केवल नेताओं की ही बात न सुनें बल्कि हमारी बात भी सुनें जो कि सबसे निचले स्तर के कार्यकर्त्ता हैं?

मेरे दल तृणमूल कांग्रेस की ओर से हम आपको पूरा सहयोग देने तथा आपके द्वारा दिए गए मार्गनिर्देशों का पालन करने का आश्वासन देते हैं। आज समय की मांग यह है कि एक स्थिर सरकार होनी चाहिए। जनता प्रत्येक वर्ष चुनाव नहीं चाहती है। जनता यह नहीं चाहती है कि उनका धन चुनाव करवाने में खर्च किया जाए। अतः, वह एक स्थिर सरकार चाहते हैं। महोदय, अब अंग्रेजी वर्णमाला का अक्षर 'ए' बहुत ही भाग्यशाली है। प्रधानमंत्री का नमा भी 'ए' अक्षर से आरम्भ होता है। और माननीय अध्यक्ष महोदय आन्ध्र प्रदेश के हैं, उनके राज्य का नाम भी 'ए' अक्षर से आरम्भ होता है। हम सब उन्हें बधाई देते हैं।

[हिन्दी]

मैं एक शेर कहना चाहती हूं :—

''बदल जाए अगर माली, चमन होता नहीं खाली,
बहारें फिर भी आती हैं, बहारें फिर भी आएंगी।''

[हिन्दी]

श्री राम विलास पासवान (हाजीपुर) : अध्यक्ष जी, आपके लोक सभा के अध्यक्ष होने पर मैं जनता दल की ओर से आपको बहुत-बहुत मुबारकबाद देना चाहता हूं और जैसा कि सदन के नेता ने और विपक्ष के नेता सहित सभी नेताओं ने कहा कि यह सदन की गरिमा है और यह सदन लोकतंत्र की सर्वोच्च संस्था है तथा उस संस्था के आप अध्यक्ष के रूप में निर्वाचित किए गए हैं। अब यह अधिक मायने नहीं रखता कि आप सर्वसम्मति से हैं या बहुमत से हैं या सर्वानुमति से हैं लेकिन अब आप सदन के अध्यक्ष हैं और मुझे पूरी उम्मीद है कि जो सदन की गरिमा है, वह सदन की गरिमा आपके हाथ मे सुरक्षित रहेगी। आज हमारे बीच में संगमा साहब अध्यक्ष के पद पर नहीं हैं लेकिन इस सदन के सदस्य के रूप में वह हैं और अभी हमारे साथी ने कहा कि यहां हमारे बीच में श्री शिवराज पाटिल साहब हैं, श्री बलराम जाखड़ साहब हैं और इन सब लोगों की गाइडेंस हम सब लोगों को मिलती रहेगी। मैं संगमा साहब को बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहता हूं कि इस गरिमा को, इस परम्परा को आपने बनाए रखा। आज आप अध्यक्ष के पद पर हैं या नहीं हैं लेकिन पूरे देश ने आपको सराहा है और मैं समझता हूं कि जो आपने मिसाल कायम की है, वह मिसाल हम सब के लिए एक मार्गदर्शक का काम करेगी। जो सदन की राजनीति है, उसके भी मार्गदर्शक का काम करती रहेगी।

अध्यक्ष जी, आप हमारे पुराने साथी रहे हैं, दसवीं लोक सभा में रहे हैं, नजदीक से हम लोगों को जानते हैं। आप मधुरभाषी हैं, मिलनसार हैं, आपमें सादगी भी हैं और मैं समझता हूं कि सादगी के साथ-साथ जिस अध्यक्ष के पद पर आप हैं, उस अध्यक्ष पद की गरिमा आपके हाथ में सुरक्षित रहेगी। इन्हीं शब्दों के साथ मैं आपको एक बार फिर से बहुत-बहुत धन्यवाद और बधाई देता हूं।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : अब मैं श्री आर० मुथैया को बोलने के लिए कहूंगा।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : हमारे पास स्लिप पहले ही आ गई है। हम चांस देंगे।

(व्यवधान)

[अनुवाद]

जल-भूतल परिवहन मंत्री (श्री आर० मुथैया) : माननीय अध्यक्ष महोदय, आपको इस संसदीय लोकतंत्र में लोक सभा के अध्यक्ष के इस महत्वपूर्ण पद पर चुने जाने के लिए बधाई देते हुए बहुत खुशी तथा गर्व अनुभव कर रहा हूं।

चूंकि मैं दक्षिण क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता हूं, मैं बहुत कृतज्ञता के साथ लोकसभा के सदस्यों की प्रशंसा करता हूं और उन्हें धन्यवाद देता हूं। कि उन्होंने हमारे पड़ोसी राज्य से हमारे एक साथी को इस सदन के अध्यक्ष के पद के लिए चुना है।

महोदय, आपके चुनाव द्वारा एक बार फिर यह सिद्ध हो गया कि इस देश में और हमारे लोकतंत्र में एक दलित कोई भी कार्य कर सकता हैं, जो कि उसे सौंपा गया। आप पहले भी वर्ष 1991 से 1996 की अवधि में इस सदन के सदस्य रहे हैं और कई बार आन्ध्र-प्रदेश विधान

सभा के सदस्य रहे हैं। मुझे विश्वास है कि इन सभी अनुभवों के होते हुए आपको संसदीय व्यवहार तथा नियमों की पूर्ण जानकारी है। आप आन्ध्र प्रदेश में मंत्री तथा जिला परिषद् के अध्यक्ष भी रहे हैं और इसलिए आपको इस देश की प्रशासनिक प्रणाली की पूरी जानकारी हैं। अत: मैं उम्मीद करता हूं और मुझे विशवास है कि आप इस 'जोखिम' को उठाने में भी सफल होगें। महोदय, मैं इस कार्य में 'जोखिम' शब्द का उल्लेख क्यों कर रहा हूं इसका कारण है तमिलनाडु विधान सभा में अध्यक्ष के पद पर पांच वर्ष की पूरी अवधि का मेरा बहुत अनुभव।

मुझे उम्मीद है और विश्वास हैं कि आप अपने इस प्रयास में भी सफल होंगे जैसा कि विगत में आपको सौंपे गए कार्यों में आप सफल रहे हैं।

इन शब्दों के साथ, मैं अपने तथा अपने दल, अन्नाद्रमुक जिसका नेतृत्व हमारी नेता पुराच्छिथैलेवी डा० जयललिता कर रही हैं, की ओर से आपको एक बार फिर बधाई देता हूं।

[हिन्दी]

श्री मुलायम सिंह यादव (संभल) : अध्यक्ष महोदय, आपके सर्वोच्च पद पर चुने जाने पर हम अपने दल की तरफ से आपका अभिनन्दन करते हैं और आपको बधाई भी देते हैं। मुझे विश्वास है कि आप इस महान सदन की परम्पराओं का निर्वहन करेंगे। हमें कोई शिकायत नहीं है कि आपका अभिनन्दन करने के लिए भी पर्ची भेजनी पड़े। पहले ही दिन से परम्परा टूटने लगी। इसी तरह से हम लोग कहीं पीछे बैठ जायेंगे, तो आपको दिखाई भी नहीं देंगे। अगर हम पीछे बैठ गए हैं, तो फिर जब चाहेंगे, आप तब बुलायेंगे। इसलिए पहले ही दिन से इस सदन की जो परम्परा है, जो गरिमा है, उसको बनाए रखने की कोशिश करेंगे। आपका बायोडाटा हमें पूरा मालूम नहीं है। यह सही है कि हमें अनुभव बताया गया है। मुझे विश्वास है कि आप इस पद पर रह कर और अनुभव हासिल करेंगे। हम इतना ही कह सकते हैं।

अपराह्न 5.00 बजे

हम इतना जरूर कहना चाहते हैं, हमारी कुछ शिकायतें हैं कि अगर पीछे बैठ कर कोई माननीय सदस्य शिकायत करते हैं तो आप उनकी बात अवश्य सुनें। आप इस सर्वोच्च पद पर बैठ कर लोकतंत्रीय व्यवस्थाओं का सबसे अच्छा आदर्श प्रस्तुत करें। आज कुर्सी पर बैठे हुए देश के बहुत से लोग खुल्लमखुल्ला लोकतंत्र का मजाक उड़ा रहे हैं, लोकतंत्र की धज्जियां उड़ा रहे हैं, इसे पूरा देश देख रहा है। ... *(व्यवधान)* हम हंगामा करने में कमजोर नहीं हैं।

अध्यक्ष महोदय, कुछ ऐसे लोग हैं, "चित है तो उनकी, पट है तो उनकी।" वे जो करना चाहते हैं, करते हैं। इस सर्वोच्च पद के लिए हमारा पूरा प्रयास था कि सर्वसम्मति से चुनाव हो। मुझे पता नहीं कि इसमें कितना सत्य था, कितना गलत, लेकिन समाचारपत्रों के माध्यम से जो कुछ पता चला और यह सच्चाई है कि वायदा किसी का किया और बाद में कुछ और किया- "कहीं पे निगाहें, कहीं पे निशाना।" हम देखते ही रह गए। हम तो यही सोचते रहे, हमारी निगाहें कहीं थी लेकिन माननीय प्रधानमंत्री जी ने निशाना कहीं और मार दिया। हम फिर भी आपको अपने दल की तरफ से विश्वास दिलाते हैं कि हम आपका पूरा सहयोग करेंगे। ... *(व्यवधान)*

अध्यक्ष जी, हमें विश्वास है कि आप हमें विश्वास में लेते रहेंगे और हमें विश्वास देते रहेंगे। अभी कोई समय नहीं निकल गया, इसलिए हम जिस सिद्धांत को लेकर इस देश को आगे बढ़ाना चाहते हैं, देश के सामने जहां एक तरफ तकलीफ है, भूख-प्यास है उसी के साथ-साथ देश के सामने बहुत बड़े खतरे भी हैं। उन खतरों में आप इस सर्वोच्च पद पर आसीन हुए हैं। हमें विश्वास है कि जिन खतरों को लेकिर हम सब एक हुए थे उसी तरह आप पूरे सदन को एक रखने की कोशिश करेंगे तभी इस देश की बहुत बड़ी सेवा होगी। लोकतंत्र की सेवा तभी होगी जब देश बचेगा। आपको जिस सर्वोच्च पद पर बैठने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है उससे हम खुश हैं, नाराज नहीं हैं लेकिन जो प्रक्रिया अपनाई गई है उस प्रक्रिया से हमें जरूर थोड़ी तकलीफ है वरना आपको तो हम पहले ही मान लेते। ... *(व्यवधान)* हम तो सच बोलना जानते हैं। ... *(व्यवधान)*

अध्यक्ष जी, आप विपक्ष में बैठे हुए माननी सदस्यों का हमेशा ध्यान रखिए। विपक्ष कहे कि आप निष्पक्ष हैं तो आप जिन्दगी भर निष्पक्ष रहेंगे। मुझे पूरा भरोसा है आप विपक्ष के अधिकारों का हनन नहीं होने देंगे। हो सकता है कि कल विपक्ष में बैठे दल भी बदल जाएं लेकिन हमारा कहना है कि इस देश की समस्याओं को उजागर करने के लिए आप हमारे पीछे बैठे हुए माननीय सदस्यों को भी बोलने का मौका देंगे और जो देश के सामने खतरे हैं उन खतरों को देखते हुए इस देश की समस्याओं के बारे में यहां चर्चा होगी।

हम जैसे तमाम लोगों को आप विशेष मौका देंगे। हम फिर आपका अभिनंदन करते हैं, आपको बधाई देते हैं और आपको आश्वासन देते हैं कि हम अपने दल की तरफ से आपको सदन चलाने में पूरा सहयोग करेंगे।

श्री लालू प्रसाद (मधेपुरा) : अध्यक्ष महोदय, मुझे आज हार्दिक प्रसन्नता हुई है। आज से पहले देश की राजनीति जो असमंजस की चल रही थी भारतीय जनता पार्टी और उनके अलाई ... *(व्यवधान)* अध्यक्ष महोदय, या मजाक की बात नहीं है, यह गंभीर प्रश्न है। मूल्यों की राजनीति करने मे विख्यात माननीय प्रधानमंत्री जी ने संगमा जी के लिए कहा था, स्वीकार किया था और उस पक्ष के लोगों ने संगमा जी को बधाई भी दी श्री ... *(व्यवधान)* आप बैठ जाइये, आप हम लोगों को छेड़िये मत, गर्म हो गये तो फिर ... *(व्यवधान)* अध्यक्ष महोदय, मैंने यह सुना कि इस देश का एक नेता, धर्मनिरपेक्षता में विश्वास रखने वाले एक नेता ने यह कहा है कि हम कांग्रेस और भारतीय जनता पार्टी से समान दूरी रखेंगे। इसका मतलब हुआ न्यूटरल गेअर। लेकिन न्यूटरल गेअर में कोई गाड़ी चलती नहीं है और एकाएक स्थिति यह आ गयी कि वह गाड़ी टॉप गेअर में चली गयी। इसमें वाजपेयी जी को दोष देना, उन पर दोष मढ़ना उचित नहीं हैं आज देश की राजनीति गिव और टेक की ओ गयी है। अध्यक्ष महोदय, आज जो राजनीति का खेल चल रहा है उसमें हम लोग वाजपेयी जी की परेशानी को समझ सकते हैं। मैं तो डिवीजन के पक्ष में था, मैं चाहता था कि डिवीजन हो, क्योंकि हम मूल्यों की राजनीति करना चाहते हैं, सिद्धांतों की राजनीति करना चाहते हैं, लेकिन डिवीजन नहीं हुआ। आप अध्यक्ष बने हैं, मैं आपका अभिनंदन करता हूं और मेरे दल का आपको पूरा समर्थन रहेगा। यह भारत की गरीब जनता की सबसे बड़ी पंचायत है और इस पंचायत के गरिमामय पद पर आप बैठे हुए हैं। इस गरिमा के निर्वाह करने में मेरे दल का पूरा सहयोग आपको मिलेगा, इसमें दो राय हो नहीं सकती हैं।

माननीय प्रधान मंत्री जी सब सदन को सम्बोधित कर रहे थे तो बहुत बातें हम सुन नहीं पाए। आपको जिला परिषद की शोहरत प्राप्त हैं मैं उस चर्चा में जाना नहीं चाहता। यह वह परिषद नहीं हैं यह परिषद हिन्दुस्तान के सबसे गरीब, लाचार, विवश तथा शैडयूल्ड कास्ट और शैडयूल्ड ट्राइब्स के जो लोग है, उनके विचारों और सवालों को यहां पर रखा जाता है। इसमें हम सहयोग देंगे और सहयोग में कोई कमी नहीं आएगी। आप सहयोग कैसे लेते हैं और उसको कैसे इस्तेमाल करते हैं, यह हम लोगों को आगे

[श्री लालू प्रसाद]

देखना है। कुछ माननीय सदस्य कह रहे थे कि इस बारे में सर्वसम्मत फैसला हो गया। क्या सर्वसम्मत हो गया? प्रधानमंत्री जी का पहला काम कॉनफिडेंस वोट लेने का होगा लेकिन यहां तो सारा सिस्टम खराब पड़ा है। सिस्टम खराब यह है कि अभी तक किसी को डिविजन नम्बर एलॉट नहीं हुए हैं। ऐसे में कैसे बत्ती जलेगी? यह बहाना बनाया गया कि डिविजन नम्बर एलॉट नहीं हुए हैं और डिविजन नम्बर खराब हैं।... *(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : लालू जी, आप चेयर को एड्रैस करिए।

श्री लालू प्रसाद : मैं आपका ज्यादा वक्त न लेते हुए सिर्फ इतना कहना चाहता हूं कि ... *(व्यवधान)* मैं आपको जानता हूं। मैं आपसे पहले आया हूं। मैं 1977 का खिलाड़ी हूं। दोहरी सदस्यता के सवाल पर लौट गया था। इस बात को वाजपेयी जी जानते हैं।... *(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : लालू जी, आप चैयर को एड्रैस करें।

श्री लालू प्रसाद : महोदय, यह आपका अभिनन्दन हो रहा है। अभी आपको अभिनन्दन करना बाकी है। मैं इस अवसर पर आपको बधाई देता हूं। आप इधर से निश्चिंत रहिए। हम चाहते हैं कि कोई विद्वान आदमी डिप्टी स्पीकर भी जल्दी बन जाना चाहिए जिससे आपका काम हल्का हो सकें। हम सभी का आपको सहयोग मिलता रहेगा। इन्हीं शब्दो के साथ मैं आपका अभिनन्दन करता हूं।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : श्री के० येरननायडू।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाइए। मैनें श्री येरननायडू को बुलाया है।

श्री के० येरननायडू (श्रीकाकुलम्) : माननीय अध्यक्ष महोदय, मुझे इस अभिलषित पद पर आपका स्वागत करते हुए बहुत सम्मान का अनुभव हो रहा है। मुझे व्यक्तिगत रूप से आपको इस सम्मानित स्थिति में देखकर बहुत खुशी हो रही है चूंकि मैं आपको पिछले बीस वर्षों से जानता हूं। मुझे इस सदन को यह सूचित करते हुए गर्व का अनुभव हो रहा है कि मैं श्री जी०एम०सी० बालयोगी को आन्ध्र विश्वविद्यालय से विधि स्नातक करते समय एक सहपाठी तथा अपने एक अच्छे मित्र के रूप में जानता हूं। श्री बालयोगी में आन्ध्र प्रदेश विश्वविद्यालय के विधि महाविद्यालय के विद्यार्थी जीवन के दौरान कर्मठ और अग्रणी नेता के गुण दिखाई देते थे।

मुझे सदन को यह बताते हुए भी गर्व हो रहा है कि श्री जी०एम०सी० बालयोगी एक पहाड़ी क्षेत्र के निवासी हैं, तथा उनका जन्म एक निर्धन परिवार में हुआ और वे एक निर्धन वर्ग के प्रति कटिबद्ध हैं। पूर्व गोदावरी जिले के जिला परिषद् के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने आधारभूत विकास के लिए तथा बुनियादी न्यूनतम सेवाओं के लिए भी काफी योगदान दिया। पिछले पांच वर्षों में पूर्वी गोदावरी जिले के सभी लोगों ने अपनी मधुर यादों के साथ उनकी प्रशंसा की है। आन्ध्र प्रदेश सरकार के उच्च शिक्षा मंत्री के रूप में भी उनकी सभी द्वारा प्रशंसा की जाती रही है। राज्य सरकार में कैबिनेट मंत्री के रूप में तथा जिला परिषद के अध्यक्ष के रूप में उनके व्यापक अनुभव उन्हें लोक सभा के अध्यक्ष के रूप में कर्त्तव्यों के निष्पादन में निश्चय ही सहायक होगें।

मैं सदन को यह भी बताना चाहूंगा कि संसदीय लोकतंत्र में अध्यक्ष की स्थिति अत्यंत महत्वपूण है। इस पद पर श्री अन्नतसायानाम आयंगर, श्री मावलंकर, श्री नीलम संजीव रेड्डी, श्री शिवराज पाटिल, श्री पी०ए० संगमा जैसी विधि तथा राजनीति के प्रतिष्ठित व्यक्ति तथा अन्य जाने माने व्यक्ति विराजमान रहे हैं। मैं इसे एक ऐतिहासिक दिन कहूंगा क्योंकि पहली बार एक कमजोर वर्ग के व्यक्ति को इस सम्मान से सुशोभित किया गया है। तेलुगू देशम दल, जो कि सामाजिक न्याय में विश्वास रखता है, इस अभिलषित पद के लिए श्री बालयोगी के नाम का प्रस्ताव किये जाने पर सम्मान का अनुभव करता है तथा उन्हें लोक सभा के अध्यक्ष के रूप में देखकर प्रसन्न है।

मैं सभी सदस्यों तथा सभी राजनीतिक दलों को बधाई तथा धन्यवाद देना चाहूंगा जिन्होंने श्री बालयोगी को इस सदन के अध्यक्ष के रूप में चुनने में समर्थन दिया। इस संबंध में, मैं श्री बालयोगी को बहुत-बहुत मुबारकबाद तथा बधाई देना चाहूंगा और तेलगु देशम दल की ओर से इस सभा को उपयुक्त तरीके से चलाने में पूरा सहयोग देने की पेशकश करता हूं। अब अध्यक्ष का चुनाव हो गया है, मैं सभी सदस्यों और राजनीतिक दलों से अपील करता हूं कि वे संविधान में उल्लिखित गौरवन्वित तरीके से सभा की कार्यवाही चलाने में अध्यक्ष को सहयोग दें। आप इस तथ्य को जानते है कि इस सदन की कार्यवाही चलाना आसान कार्य नहीं है लेकिन मुझे विश्वास है कि श्री बालयोगी अपनी सक्षम योग्यताओं के साथ इस सभा की कार्यवाही चलाने में सफल होंगे।

मैं भगवान से प्रार्थना करता हूं कि वे उन्हें इस सभा की कार्यवाही गौरवन्वित तथा निष्पक्ष तरीके से तथा इस सम्मानीय सभा के सदस्यों को संतुष्ट करते हुए चलाने के लिए शक्ति दे तथा पथप्रदर्शन करें।

इस्पात मंत्री तथा खान मंत्री (श्री नवीन पटनायक) : माननीय अध्यक्ष महोदय बीजू जनता दल की ओर से मैं आपको आपके माननीय अध्यक्ष के पक्ष पर निर्वाचित होने पर बधाई देता हूं। यदि राष्ट्र की नियति इस सम्माननीय सभा पर निर्भर करती हैं तो इस इस सभा की नियति माननीय अध्यक्ष महोदय के हाथों में निहित है। महोदय, मुझे विश्वास है कि इस माननीय सभा को अध्यक्ष के पद के लिए बहुत ही सक्षम व्यक्ति मिला है।

यह भी राष्ट्र के लिए बहुत ही गौरव की बात है कि एक दलित को अध्यक्ष का यह उच्च पद प्राप्त हुआ है। आपने राजनीति में 1982 में प्रवेश किया लेकिन पांच वर्षों के इस अल्प समय में आप जिला पंचायत परिषद् के प्रमुख चुने गए। आप 1991 में लोक सभा के सदस्य चुने गए। अभी तक आप आन्ध्र प्रदेश सरकार में उच्च शिक्षा प्रभार के मंत्री थे। अब आप दूसरी बार लोक सभा के सदस्य चुने गए हैं और माननीय अध्यक्ष के उच्च पद पर गौरवान्वित किए गए हैं।

बीजू जनता दल की ओर से, मैं एक बार फिर आपको बधाई देता हूं और आने वाले दिनों में पूर्व सहयोग का आश्वासन देता हूं।

[हिन्दी]

श्री दिग्विजय सिंह (बांका) : अध्यक्ष जी, मैं अपनी पार्टी की तरफ से आज भारत के महान संकट के समय अध्यक्ष चुने जाने के रूप में आपका अभिनन्दन करता हूं। आजादी के पचासवें साल में आपके जेसे व्यक्तित्व का आदमी न सिर्फ इसलिए कि अनुभव का बहुत बड़ा खजाना आपके साथ है, लेकिन गांधी का वह सपना कि इस देश के उच्च पदों पर एक दलित वर्ग का आदमी ही बैठे, आज आपने उस सपने को पूरा किया है, इसलिए मैं आपका अभिनन्दन करता हूं।

यह सदन कई बातों की गवाही देता रहा है। हिन्दुस्तान के लोगों के

पचास वर्षों की आजादी की गवाही भी इसी सदन से लोगों को दिखी है। यह देश आजादी के पचासवें साल में आपके जैसे अध्यक्ष पाकर गौरवान्वित महसूस करता है। हमें प्रसन्नता है कि आज सारे सदन ने आपका अभिवादन किया है और अभिवादन के साथ देश के सौ करोड़ लोगों की आकांक्षाओं का प्रतीक भारत की यह संसद अपने कामों में आपके सहयोग से उन लोगों की आकांक्षाओं को पूरा कर सके जिन आकांक्षाओं को लेकर भारत की 12वीं लोक सभा का गठन हुआ है। मैं अपने दल की ओर से आपको पूरा विश्वास दिलाता हूं कि आपके अध्यक्ष के कामों में हमारा पूरा समर्थन आपको मिलेगा।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : क्या भा०क०पा० के कोई सदस्य बोलेंगे?

श्री इन्द्रजीत गुप्त (मिदनापुर) : अध्यक्ष महोदय, मेरा स्वास्थ्य अच्छा नहीं हैं। इसलिए मैं थोड़े शब्दों में ही अपनी बात कहूंगा, मुख्यत: मैं इस सम्मानीय पद के लिए आपको गौरवान्वित किए जाने के लिए भा०क०पा० की ओर से बधाई देता हूं और आपको विश्वास दिलाता हूं कि आपको हमारी तरफ से संसद के प्रक्रिया नियमों और परम्पराओं के अनुसार इस सभा को चलाने में पूर्व सहयोग मिलेगा। व्यक्तिगत रूप से मुझे और मेरी पार्टी को इस बात की खुशी है कि स्वतन्त्रता के 50 वर्षों के बाद आज हमने — मैं नहीं जानता कि यह सूझबूझ का परिचायक है अथवा नहीं है। — एक भूल के लिए सुधार किया गया है, मेरे विचार में हमारे देश के इतिहास में यह एक दाग था अर्थात आपके समुदाय का एक सदस्य, दलित समुदाय का एक सदस्य इस पद पर गौरवान्वित किया गया है। ऐसा बहुत पहले, बहुत वर्ष पहले किया जाना चाहिए था, लेकिन हम ऐसा करने में असफल रहे।

महोदय, पिछली बार हमने अध्यक्ष का चुनाव किया, जिसमें इस सभा ने पूर्वोत्तर के एक नेता तथा जनजातियों के प्रतिनिधि श्री पूर्वो ए० संगमा को चुना था। ऐसा जान-बूझ करके तथा हमारे देश के बहुत अधिक अशान्ति पूर्व क्षेत्रों में रह रहे उन लोगों को अच्छा संकेत देने के लिए किया गया और मैं समझता हूं कि जो हमने किया यह बहुत ही विवेकपूर्ण कदम था और आज आपका चुनाव करके देश के करोड़ों दलितों, अन्य वंचित शोषित पद दलित लोगों को यह सन्देश पाएंगा कि इस सभा ने उनको भुलाया नहीं है और उनके प्रतिनिधियों में से एक को संसद में उच्च सम्मान दिया है?

महोदय, यदि आप मुझे ऐसा कहने की अनुमति दें तो मैं कहूंगा कि आप सौभाग्यशाली व्यक्ति है। लगभग एक ही रात में आपको ख्याति प्राप्त हो गई है, यह ख्याति केवल देश में ही नहीं, मैं कहना चाहूंगा कि विदेशों में भी प्राप्त हुई है। क्योंकि भारतीय संसद में अध्यक्ष का पद कोइ बहुत ही छोटा मामला नहीं है और जिन लोगों ने कभी आपका नाम नहीं सुना था महोदय मैं आपको इसके लिए दोषी नहीं ठहरा रहा हूं — संभवत् 24 घंटे पहले आपका नाम नहीं सुना था अब और हर रोज वह दलित समुदाय के इस सदस्य, जोकि इस सभा के अध्यक्ष सुने गए हैं, को देखेंगे सम्मान देंगे और आदर करेंगे। यह हम सभी के लिए बहुत ही सन्तोष और गर्व का विषय है।

महोदय हमें याद है कि 50 वर्ष पहले स्वतंत्रता प्राप्ति की पूर्वसंध्या पर, देश के प्रधान मंत्री जिन्होंने हमें 250 वर्षों तक दास बनाए रखा — मैं सर विनस्टन चर्चिल का उल्लेख कर रहा हूं — लंदन में हाउस ऑफ कामन्स में बोलते समय आग्रह किया था कि अंग्रेजों के भारत छोड़ते ही देश टुकड़ों में बिखर जाएगा, यह एकता नहीं रख पाएगा, ये भारतीय आपस में लड़ेंगे, दंगे होंगे, यहां लड़ाई होगी और देश का विनाश हो जाएगा। संभवत: यह विस्टन चर्चिल का स्वप्न था जिसकी वह भविष्यवाणी करना चाहते थे। अब 50 वर्ष के बाद हर कोई देख सकता है कि भारत विश्व में सर्वोत्तम गणराज्यों में से एक है। हमें इस गणराज्य का नागरिक होने का गर्व है जोकि अन्तर्राष्ट्रीय राष्ट्र समुदाय में सिर ऊंचा करे खड़ा है।

मैं आपको याद दिलाना चाहूंगा कि इस चुनाव, जो कि हाल ही में हुए है, से पहले, इस देश के करोड़ों लोगों को यह आशंका थी कि क्या स्थायी सरकार बनेगी अथवा एक बार फिर त्रिशंकु संसद बनेगी? यह प्रश्न सभी तरफ उठ रहे थे। संभवत: त्रिशंकु संसद की सही तरीके से नहीं समझा गया लेकिन वह प्रश्न था कि क्या स्थायी सरकार बनेगी अथवा एक या दो वर्षों में पुन: चुनाव होंगे? यह हम सबके लिए बहुत बड़ी चुनौती है क्योंकि इस संस्था की विश्वसनीयता, स्वयं इस संसद की विश्वसनीयता पर सम्पूर्ण देश के लोगों द्वारा प्रश्नचिह्न लगाया जा रहा है।

इसके लिए कौन जिम्मेदार है? हम इसके लिए उत्तरदायी हैं। हमारा अपना व्यवहार कैसा है, हम किस प्रकार का व्यवहार करते हैं, क्या हम आम आदमी की इच्छाओं को पूरा करने में समर्थ हैं अथवा नहीं, क्या यहां हम ऐसे मामलों पर बहुत अधिक समय व्यतीत करते हैं जिनका वास्तव में कोई महत्व नहीं है इन सभी बातों पर हम सभी को गम्भीरता से विचार करना चाहिए। महोदय आपके इस पद पर आसीन रहते मैं आपसे अनुरोध करूंगा कि आप इस प्रश्न पर विशेष ध्यान दें। लोगों की नजरों में इस सभा की विश्वसनीयता बहाल की जानी चाहिए। इसकी विश्वसनीयता में कमी आई हैं इसमें कमी क्यों आई है? हम सभी को इसका आत्म-लोचना करने की आवश्यकता है। मुझे विश्वास है कि यदि हम सब इसके लिए गम्भीरता से प्रयास करें तो यह सभा को अवश्य ही अपना पूर्व गौरव और मान पुन: प्राप्त होगा एक ओर आपकी भूमिका इस संबंध में बहुत ही महत्वपूर्ण होगी।

महोदय, मैं इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं करना चाहता। मैं आपको अपनी ओर से सहयोग का आश्वासन देता हूं और आपके अच्छे स्वास्थ्य की कामना करता हूं।

[हिन्दी]

रसायन और उर्वरक मंत्री तथा खाद्य मंत्री (सरदार सुरजीत सिंह बरनाला) : स्पीकर साहब, आपके इलैक्शन पर और स्पीकर बनने पर हमें बहुत खुशी हुई है और मैं अपनी तरफ से पार्लियामेंट में शिरोमणि अकाली दल पार्टी की तरफ से आपको हार्दिक बधाई देता हूं।

मुझे इस बात की खुशी है कि आप दलित कम्युनिटी से हैं और पहली बार पार्लियामेंट में स्पीकर के तौर पर इस बार बहुत बड़े ओहदे पर आपको सेवा करने का मौका मिला है और बहुत खुशी की बात है कि आप एक रीजनल पार्टी से हैं। रीजनल पार्टीज की महत्ता कुछ सयम से बढ़ रही हैं पहले रीजनल पार्टीज को कोई जानता नहीं था, कोई ध्यान नहीं दिया जाता था, लेकिन आहिस्ता-आहिस्ता रीजनल पार्टीज की इम्पौर्टेंस बढ़ी हैं आप एक इम्पौर्टेंट रीजनल पार्टी से है और पहली दफा स्पीकर बन रहे हैं इसलिए भी मैं आपको बधाई देना चाहता हूं।

मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि पार्लियामेंट में जो हमारी पार्टी है वह हर किस्म का, हर मौके पर आपको सहयोग देगी और पार्लियामेंट का डिकोरम रखते हुए हमारी पार्टी का सहयोग मिलता रहेगा और अन्त में मैं आपको एक बार फिर बधाई देता हूं।

[अनुवाद]

श्री मुरासोली मारन (मद्रास मध्य) : अध्यक्ष महोदय, मैं द्र०मु०क०

[श्री मुरासोली मारन]

दल और अपनी ओर से इस सभा में आपके अध्यक्ष के पद पर निर्वाचित होने पर आपको हार्दिक बधाई देता हूं।

महोदय, इससे पूर्व कि मैं आपके बारे में अपनी बात जारी रखूं मैं सोमनाथ बाबू और पासवान जी द्वारा आपके पूर्ववर्ती श्री संगमा की सेवाओं के संबंध में रखे गए विचारों के बारे में अपनी बात कहना चाहूंगा। वह अपनी निष्पक्षता और स्वतंत्र विचारों के लिए अत्यधिक प्रसिद्ध थे। इसके अतिरिक्त हम उनके साहस की भी प्रशंसा करते हैं। जब कभी कोई गलती करता था तो वे निष्पक्ष भाव से गुस्से में शेर की भांति जोर से बोलते थे। इसलिए मैं श्री संगमा के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता हूं और उन्हें 'पूर्वोत्तर भारत का सिंह' कहता हूं।

महोदय, यदि मैं मजाक में कुछ कह गया हूं, तो कृपया मुझे क्षमा करना। *(व्यवधान)*

श्री टी०आर० बालू (मद्रास दक्षिण) : अध्यक्ष महोदय, मेरे नेता ने कुछ भी असंदीय नहीं कहा है *(व्यवधान)*

श्री राम विलास पासवान (हाजीपुर) : इसमें क्या गलत है?

अध्यक्ष महोदय : कृपया अपना भषण जारी रखें।

(व्यवधान)

श्री अजीत जोगी (रायगढ़) : महोदय, वह जो भी कहना चाहें उनें वह कहने का अधिकार है *(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : कृपया अपना भाषण जारी रखें।

श्री मुरासोली मारन : महोदय, मैं अपनी बात जारी रख रहा हूं। महोदय यदि मैं मजाक मैं कुछ कह देता हूं तो आप मुझे क्षमा करें। कल, नामांकन भरने के लिए रखे गए नियंत समय से ठीक तीन मिनट पहले अर्थात् अपराह 11.57 बजे आसन अपने नामांकन संबंधी दस्तावेज भरे। एक समाचार पत्र में निम्न प्रकार शीर्षक दिया :

"इट वास श्री मिनट टू सटारडोम फॉर बाल योगी"

महोदय, यदि किसी को कोई पद मिलता, तो लोग कहा करते, 'सितारो का धन्यववाद करो'। आपके संबंध में हमें कहना चाहिए "इंडियन एयरलाइन्स का धन्यवाद"। अन्यथा इस पद पर कोई और होता। *(व्यवधान)*

मैं श्री बरनाला के विचारों से सहमत हूं। जैसा कि उन्होंने कहा अप क्षेत्रीय पार्टी के सदस्य हैं और इससे भी महत्वपूर्ण बात तो यह है कि आप दलित वर्ग से हैं। इसलिए हमें दोहरी खुशी है।

महोदय, ऐसा समझा जाता है कि सभा के संचालन के लिए असाधारण प्रक्रिया की आवश्यकता होती है। लेकिन मैं, ऐसा नहीं समझता। हाउस आफ कामन्स' में वे कहा करते थे कि सभा के संचालन के लिए आपको, जैसा कि वे कहते हैं 'हाउस आफ कामन्स टैक्ट" (सभा संचालन कौशल) की आवश्यकता होती हैं मैं तो कहूंगा कि इस सभा के संचालन के लिए आपको "लोक सभा संचालन कौशल" की आवश्यकता होगी। हां, आप यह पूछ सकते हैं कि यह कौशल कोई कैसे हासिल कर सकता है। जब मैंने 1967 में लोकसभा के सदस्य के रूप में इस सभा में प्रवेश किया उस समय आन्ध्र प्रदेश के महान सपूत, भारत मां के महान सपूत श्री नीलम संजीव रेड्डी माननीय अध्यक्ष महोदय के पद को सुशोभित किए हुए थे। उस समय श्री नाथ पै, श्री मधुलिमये, श्री ए०के० गोपालन, श्री डांगे, प्रो० एन०जी० रंगा, श्री पी० राममूर्ति, श्री एम०आर० मसानी, श्री सोमनाथ चटर्जी के पिता श्री एन०सी० चटर्जी, और अन्य कई बड़े-बड़े दिग्गाज नेता यहां मौजूद थे। वे अनेक प्रश्न, अनेक व्यवस्था के प्रश्न उठाया करते थे। कई-कई और अन्य प्रकास से बीच में टोकाटाकी करते थे। अध्यक्ष पीठ पर आसीन श्री नीलम संजीव रेड्डी ऐसे मौकों पर कभी भी नियम-पुस्तिका नहीं देखा करते थे। वे सभा का संचालन बड़ी सूझबूझ एवं आनन्द-विनोद के साथ किया करते थे। इसलिए मेरा आपसे अनुरोध है कि यदि आपके सामने कोई कठिनाई आए तो उस समय आप आन्ध्र प्रदेश के महान सपूत श्री नीलम संजीव रेड्डी के पदचिन्हों का अनुसरण करें।

महोदय, इस सभा में कार्य संचालन की आवश्यकता ही इस समय की महत्वपूर्ण आवश्कयता है। आज विधायिका के पंगु होने का खतरा मडरा रहा है क्योंकि जनता ने आधा-अंधूरा जनादेश दिया है। यह एक आधा-अधूरा जनादेश ही है। वे बीस और सदस्य इस ओर या उस ओर जीत कर आने चाहिएं थे। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। इस प्रकार संख्या बराबर ही हैं यदि मैं यहां इस "शिष्टोक्ति' का प्रयोग करूं कि बहुधा 'राजनैतिक जोड़तोड़' की रणनीति अपनायी जाती है, तो यह उचित प्रतीत होता है। मैं इसे "राजनैतिक जोड़तोड़" ही कहता हूं। आज यही हो रहा है। दूसरे शब्दों में इस सभा में प्रतिदिन, हर समय, हरके मतदान संख्या का खेल बड़े सूझबूझ से खेला जाएगा। इसका कारण यह है कि भारत की राजनीति आन्तरित मतभेदों और विवादास्पद राजनैतिक स्वार्थों के दलदल में फंस गई है और इस दलदल में' धंसती जा रही है।

इसलिए आमसहमति अब एक संकेत शब्द बन गया हैं और माननीय प्रधान मंत्री जी ने भी दूरदर्शन पर अपने भाषण में यही बात कही हैं लेकिन वह आम सहमति क्या है? आम सहमति इस तरह की नहीं हो सकती है। जो हमने अध्यक्ष के चुनाव मे दखी। हम एक वास्तविक एवं निष्कपर आम सहमति चाहते हैं। मैं समझता हूं हमें यह प्रधान मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी से मिल सकती है।

महोदय, माननीय अध्यक्ष जी को संसदीय लोकतंत्र में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होती है। उसे एक स्कूल अध्यापक की भूमिका निभानी होती है, एक व्यास्व्याता की भूमिका निभानी होती है तथा एक ऐसे व्यक्ति की भूमिका निभानी होती है जो अपने कौशल एवं बुद्धि चातुर्य से अपना काम करवा लेता है तथा बिना बेंत दिखाए बंत से नियन्ति एवं अनुशासित करता है। इससे भी महत्वपूर्ण बात तो यह है कि संविधान की दसवीं अनुसूची ने अध्यक्ष के पद को एक नया आयाम दिया है। लोक सभा का अध्यक्ष हाउस आफ कामन्स के अध्यक्ष से अधिक शक्तिशाली हैं इसलिए आपको एक न्यायाधीश — एक निष्पदा न्यायाधीश की भूमिका भी निभानी होती है। कुछ राज्यों में इस अधिकार का दुरुपयोग हुआ हैं अध्यक्ष का पद संवैधानिक कार्यालय में तीसरा सबसे ऊंचा पद है और हमें अध्यक्ष के पद की गरिमा को ह्रास हीं होने देना चाहिए।

महोदय, जैसा कि पूर्व अध्यक्ष महोदय ने कहा है कि *"बाला"* का अर्थ "एक बालक या एक युवापुरुष" से है और *"योगी"* का अर्थ "एक संत" से हैं इस प्रकार आपके नाम से यह बोध होता है कि आप एक युवा *"योगी"* हैं। अब इस *"बालयोगी"* को *"कर्मयोगी"* बन जाना चाहिए। जैसा कि "कर्म" शब्द का अर्थ है "कर्तव्य", आपको अपने कर्तव्य क्रा निर्वहन निष्पक्ष रूप में करना है ताकि आप हम सब की प्रंशसा के पात्र बनें और इस प्रकार आप दूसरे संगमा जी बनें तथा सभा का संचालन समुचित ढंग से कर सकें। जैसा उन्होंने ठीक ही कहा है कि हमें सभा के कार्यसंचालन में व्यवधान नहीं डालना चाहिए। विधायिका पंगु इसलिए नहीं होनी चाहिए कि हममें से प्रत्येक सदस्य सभा की कार्यवाही ठप्प करने में काफी निपुर्ण है। इसीलिए आज आम सहमति अनिवार्य हो गई है और मैं समझता हूं

कि आम सहमति भी दी जाएगी।

महोदय, इस विश्वास के साथ मैं डी०एच०के० पार्टी की ओर से आपका धन्यवाद करता हूं, आपका अभिनन्दन करता हूं और आपको अपना पूरा सहयोग देने का वायदा करता हूं।

श्री शिवराज बी० पाटिल (लातूर) : महोदय, कांग्रेस पार्टी के नेता पहले ही बोल चुके हैं। मैं तो इस सभा के पूर्व अध्यक्ष के नाते बोलना चाहता हूं। मैं उस व्यक्ति के उल्लास और उसकी मनोव्यथा को जानता हूं जो इस सभा के इस प्रतिष्ठित पद पर आसीन होता है। मैं तो कहूंगा कि आपमें मनोव्यथा अधिक हो और उल्लास कम हो। मैं जानता हूं कि सभा में ऐसी स्थिति है कि जब तक इस सभा का प्रत्येक सदस्य और विभिन्न राजनीतिक पार्टियों का प्रत्येक नेता अध्यक्षपीठ सहयोग नहीं करेगा, अध्यक्षपीठ का कार्य एकदम कठिन और कष्टप्रद हो जाएगा। मुझे विश्वास है कि उस पक्ष और इस पक्ष के उच्च पदों पर आसीन अनुभवी नेता – प्रधान मंत्री महोदय, विपक्ष नेता और विभिन्न दलों के नेता, जिन्होंने हमेशा अध्यक्षपीठ से सहयोग किया है, आपसे पूरा सहयोग करेंगे। वर्तमान प्रधान मंत्री, विपक्ष के वर्तमान नेता और अन्य विभिन्न दलों के नेताओं के सहयोग पर मुझे इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है।

एक बार मुझसे पूछा गया, ''पीठासीन अधिकारी के क्या गुण होने चाहिए।'' मैंने कहा, ''यह अच्छी बात है कि पीठासीन अधिकारी कानून का ज्ञाता हो। लेकिन इतना ही काफी नहीं है, उसे राजनैतिक स्थिति की भी सूझबूझ होनी चाहिए क्योंकि अध्यक्षपीठ को जो निर्णय लेने होते हैं, वे केवल विधिगत निर्णय ही नहीं होते -- निश्चित रूप से वे विधिसम्मत निर्णय होते हैं – बल्कि उनमें राजनैतिक दृष्टिकोण भी समाहित होता है।'' इसलिए अध्यक्ष, उपाध्यक्ष एवं सभापति महोदय का विधि का ज्ञाता होना ही काफी नहीं है बल्कि उन्हें राजनैतिक स्थिति की भी काफी सूझबूझ होनी चाहिए। इसके लिए मनःस्थिति की समझ होना भी आवश्यक है अर्थात सदस्य क्यों खड़ा हुआ है, सदस्य प्रश्न क्यों पूछ रहा है, सदस्य क्यों क्षुब्ध हुआ है यदि पीठासीन अधिकारी सदस्य के साथ पूरी सहानुभूति रखता है, तो मुझे पूर्ण विश्वास है कि उसे सदस्य से पूरा सहयोग मिलेगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप ऐसे व्यक्ति हैं जिसे उनके प्रति पूरी सहानुभूति होगी जिन्हें आपके समर्थन एवं आपकी सहायता की आवश्यकता है।

इन सब बातों से ऊपर मैं समझता हूं अन्तिम विशेषता यह है, जो अध्यक्ष में होनी अनिवार्य है, कि वह संयमित रहे अर्थात स्वयं को नियन्त्रण में रखे। आप तो *योगी* हैं और *योगी* में स्वयं को नियन्त्रण में रखने का गुण होता है। यदि पीठासीन अधिकारी स्वयं को नियन्त्रण में रखकर चलता है तो सभा नियन्त्रण में रहती है।

यदि पीठासीन अधिकारी परेशान, अशान्त, और भ्रमित महसूस करता है, तो उसकी यह मनोदशा सभा में भी प्रतिबिम्बित होती है। निसन्देह आपके नाम में, आपके व्यक्तित्व में योगी का गुण समाया हुआ है और आपका यह गुण सभा के संचालन में आपके लिए सहायक साबित होगा। ईश्वर आपकी सहायता करे।

[हिन्दी]

श्री मधुकर सरपोतदार (मुम्बई उत्तर-पश्चिम) : अध्यक्ष जी, मुझे इस बात की खुशी है कि इस बार एक पिछड़े समाज का प्रतिनिधि हमारे इस सदन का मुखिया बना है, सभापति बना है।

अध्यक्ष जी, मुझे इस बात के लिए भी गौरव है कि आजादी के पचास साल मनाये जा रहे हैं और ऐसे समय पर सदन की गरिमा रखने के लिए एक दलित की नियुक्ति इस सदन के सर्वोच्च पद पर की गई है। मैं इस सदन में देख रहा हूं कि आपसे पहले इस सदन की गरिमा रखने वाले जो पूर्व सभापति हो चुके हैं, उनमें से तीन करीबन यहां पर मौजूद हैं, उनमें *डा० बलराम जाखड जी हैं, शिवराज पाटिल जी हैं,* पी०ए० संगमा जी भी हैं।

इतना ही नहीं, बल्कि यहां पर चार पूर्व पन्त प्रधान भी बैठे हुए हैं, जो इस सदन में दोबारा चुनकर आये हैं और आपके सामने रोजाना बैठने वाले हैं, तो इतने बड़े सदन में बहुत सारी समस्याएं आने वाली हैं। जिसकी थोड़ी सी झलक आपने अभी देखी है, जब यहां पर प्राइम मिनिस्टर बात करने के लिए खड़े हुए थे, उस समय आपने यहां देखा है। मुझे इतना ही कहना है कि यदि एक दलित इस स्थान पर पचास सालों के अन्दर पहली बार यहां बैठा है तो उस समय में यहां पर इस सदन में ऐसी प्रतिक्रिया क्यों उठी? मैंने बार-बार देखा, मैंने कई आवाजें भी सुनी, कौन से मैम्बरों, की, मुझे पता नहीं है, लेकिन शेम-शेम की आवाज मैंने सुनी। किसके साथ, मुझे पता नहीं है। मगर यह उचित नहीं है।

मैं उस सदन से उपेक्षा नहीं करता कि इस सदन में आये हुए, *(व्यवधान)* मैं बताता हूं, डा० बाबा साहेब अम्बेडकर, भारत रत्न, के प्रपौत्र इस हाउस में पहली बार यहां आकर बैठे हुए हैं। इतना ही नहीं, लेकिन दलितों की गरिमा उठाने का काम, प्रतिष्ठा बढ़ाने का काम यदि इस देश के अन्दर चल रहा है तो उसको सहयोग देने का काम हर व्यक्ति को करना चाहिए, तब यह काम आसानी से होगा, ऐसा मुझे लगता है।

मुझे एक बात जानकर बहुत अधिक खुशी हुई कि आपने स्पोर्ट्स एक्टीविटीज का काम किया है, आपने किसानों का काम देखा है आपने मजदूरों का काम भी देखा है। ये तीनों वर्ग ऐसे हैं कि इस देश के अन्दर उनके प्रति किसी का भी ख्याल नहीं है। स्पोर्ट्स के बारे में तो आप जानते हैं कि हमारे देश की क्या हालत है, आप उसके बारे में जरूर थोड़ी दिलचस्पी लेंगे। आप यहां पर कोई भी डिसीजन लेंगे, वह डिसीजन बहुत स्पोर्टिंगली होगा, ऐसा मैं मानता हूं। किसानों की बात आप अच्छी जानते हैं। क्योंकि आपने उनका नेतृत्व किया है मजदूरों की इस देश में क्या हालत है, आप वह जानते हैं, क्योंकि आप एक ट्रेड यूनियन लीडर रह चुके हैं। इतना ही नहीं, आप अपने गृह राज्य आंध्र प्रदेश में उच्च शिक्षा मंत्री के रूप में भी काम कर चुके हैं। इन सभी बातों को इकट्ठा करके देखा जाए तो आपको बहुत अच्छी जानकारी है। इस जानकारी का फायदा इस सर्वश्रेष्ठ कुर्सी पर बैठने के बाद पूरे देश को मिलना चाहिए और सदन में बैठने वाले जो हमारे नए सांसद हैं, उनको भी मिलना चाहिए।

मैंने पिछले डेढ़-दो साल में देखा है कि यहां पुराने सांसदों के ऊपर ज्यादा ध्यान दिया जाता है, लेकिन जो नए सांसद होते हैं उनको बोलने का ज्यादा मौका नहीं मिलता। मैं आपसे अनुरोध करूंगा कि यदि यहां आने के बाद उनको भी दो लफ्ज बोलने का मौका मिल जाए तो ज्यादा उचित रहेगा। ऐसा नहीं होने पर क्या होता है, मैंने देखा है कि पिछली लोक सभा के करीब 280 सांसद वापस इस सदन में नहीं आ पाए। वजह यही थी कि उनको इस सदन में बोलने का मौका नहीं मिला। आज सदन की कार्यवाही हमारा देश देखता है, गरीब, मजदूर और किसान सभी लोग अपने परिवार वालों के साथ देखते हैं वे चाहते हैं कि उनका सांसद जो चुना गया है, यहां आकर हमारी समस्याओं के बारे में आवाज उठाए। अगर उसे बोलने का मौका नहीं मिलता तो उसका भी असर उसके क्षेत्र के लोगों पर पड़ता है। इस बात का आप ख्याल रखेंगे, ऐसी मुझे उम्मीद है।

आप जो जिम्मेदारी निभाने जा रहे हैं, उससे मैं बहुत प्रसन्न हूं। यह हमारे लिए बहुत खुशी की बात है। हमारा पक्ष और हमारे सभी सांसद आपकी पूरी सहायता करेंगें इतना ही नहीं, मुझे यह भी विश्वास है कि जो

[श्री मधुकर सरपोतदार]

शुरू में हो गया, जिसको टालकर सदन की गरिमा को बनाए रखा जा सकता था, उसको दोहराया नहीं जाएगा। इस बात का भी हमें ख्याल रखना होगा कि डेढ़ साल के बाद हम सब लोगों को दुबारा अपने निर्वाचन क्षेत्रों में चुनाव के लिए नहीं जाना पड़े। जो चले गए, ठीक है, लेकिन जो वापस आए उनके लिए यह दुबारा मुसीबत न आए, यह भी देखने की जिम्मेदारी भी पूरे सदन की है, आपकी है और सदन को चलाने वालों की है। मैं उम्मीद करता हूं कि हमारे देश की जनता यह नहीं चाहेगी कि डेढ़ या दो साल बाद फिर चुनाव हों, यह नहीं होना चाहिए। मैं आपसे अनुरोध करूंगा कि इस सदन की गरिमा रखने के लिए जो भी आप निर्णय लेंगे वे सभी के काम आएंगे। छोटी-मोटी बातें हो सकती हैं, फिर भी आप बैलेंस्ड माइंड रखकर उनको ठीक ढंग से निभाएंगे और पिछड़े लोगों के प्रति जो आपका प्रेम है वह बनाए रखेंगे। इस देश को आगे बढ़ाने के लिए जो आपको मौका मिला है उसका फायदा आप जरूर उठाएंगे, ऐसी मैं उम्मीद करता हूं और अपने सब साथियों की तरफ से आपको शुभकामनाएं देता हूं।

[अनुवाद]

श्री सनत कुमार मंडल (जयनगर) : अध्यक्ष महोदय, आर०एस०पी० की ओर से मैं आपको बारहवीं लोकसभा का अध्यक्ष निर्वाचित होने पर बधाई देता हूं। मैं इस बात का आश्वासन देता हूं कि आपको सभा के कार्यसंचालन में हमारा पूर्ण सहयोग मिलेगा। मेरा आपसे अनुरोध है कि आप देश के इस सर्वोच्च लोकतांत्रिक मंच में छोटी-छोटी पार्टियों के सदस्यों के प्रति भी पूर्ण न्याय बरतें।

मैं आपसे अपील करता हूं कि आप इस सभा में चल रहे वर्तमान असाधारण राजनैतिक परिदृश्य में निष्पक्ष एवं न्यायपूर्ण ढंग से कार्य संचालन करें ताकि उच्च लोकतांत्रिक मूल्य एवं संविधान की गरिमा कायम रह सके।

श्री पी०सी० थामस (मुवत्तुपुजा) : महोदय, मैं इस सभा का संचालन करने में आपको केरल कांग्रेस पार्टी की तरफ से अपना सहयोग देना चाहूंगा। मुझे विश्वास है कि आप अपने सामान्य बर्ताव, अपनी सामान्य सूझबूझ और जागरूकता से इस माननीय सभा की अध्यक्षता कर सकेंगे।

हम सभी जानते है कि इस प्रकार की सभा का पीठासीन अधिकारी बनना उतना आसान कार्य नहीं है। यद्यपि हम सभी का यह कहना है कि इस सभा की अपनी प्रतिष्ठा है फिर भी सदस्यों को उपयुक्त स्तर तक आना होगा। हम जानते हैं कि इस सभा में प्रत्येक अवसर पर अत्यधिक कठिनाई, गड़बड़ी और समस्याएं उत्पन्न हुई थी जिनका सभा के संचालन के दौरान पीठासीन अधिकारी को सामना करना पड़ा था।

मैं यह कहना चाहूंगा कि हमने जितने भी पीठासीन अधिकारी देखे हैं, उनमें से अधिकांश में हमने एक गुण पाया हैं इस सभा में आने के पश्चात मैंने ऐसे पीठासीन अधिकारी देखे हैं जिन्होंने काफी सामान्य सूझबूझ के साथ बर्ताव किया है। समस्याओं को निपटाने का उनका अपना तरीका था। परन्तु उन्होंने सारा कार्य ऐसे तरीके से किया था जो सभा के सभी दलों को स्वीकार्य था।

मैं यह कहना चाहूंगा कि इस सभा के छोटे दल और बड़े दल भी हैं। जहां तक इस सभा का सम्बन्ध है, यह प्रवृत्ति जारी रहेगी। तेलगु देशम पार्टी के सदस्य के रूप में मैं यह महसूस करता हूं कि आप उन छोटे दलों और क्षेत्रीय दलों की भावनाओं को समझ सकेंगे जो इस सभा के समक्ष अपनी तथा क्षेत्र की भावनाओं को प्रस्तुत करना चाहेंगे। मेरा विचार है कि आप सभा का सफलतापूर्वक संचालन करेंगे।

जैसा कि कई माननीय सदस्यों ने पहले ही कहा है , मैं भी भूतपूर्व अध्यक्ष श्री पूर्णो ए० संगमा और श्री बलराम जाखड़ तथा श्री शिवराज वी० पाटिल जैसे अन्य अध्यक्षों को बधाई देना चाहता हूं जिन्होंने सभा में प्रत्येक दल का सहयोग प्राप्त करके इस सभा का सफलतापूर्वक संचालन किया था। लेकिन तटस्थस रहना बहुत ही कठिन कार्य होता जा रहा है। हाल ही के दिनों में 'तटस्थ' शब्द का एक नया अर्थ मान लिया गया हैं मैं यह कहना चाहूंगा कि तटस्थ रहने की बजाय निष्पक्ष रहना अधिक बेहतर होगा। इसलिए मैं आपसे तटस्थ रहने की बजाय सभा के सभी दलों में प्रति निष्पक्ष रहने का अनुरोध करूंगा।

मैं एक छोटे राज्य से आया हूं। मुझे यह कहते हुए खेद हो रहा है कि सत्ता पक्ष में हमारे राज्य से कोई नहीं है। मेरे विचार से इस सभा में हमारी शिकायतें अधिक सुनी जानी चाहिए और केरल में किसानों विशेषकर रबड़ की खेती करने वाले किसानो तथा केरल में कृषकों को हो रही गंभीर समस्याओं को प्रस्तुत करने हेतु हम आपकी सहायता प्राप्त कर सकेगें। कई वर्गों के लोग अत्यधिक समस्याओं का सामना कर रहे हैं। इसलिए हम चाहेगें कि आप केरल जैसे छोटे राज्य को अपना अधिकांश समय देकर उस पर अधिक से अधिक विचार करें।

मैं इस अवसर पर आपको एक बार पुन: बधाई देता हूं और अपनी पार्टी की तरफ से आपको पूर्व सहयोग देने का प्रस्ताव करता हूं।

[हिन्दी]

कुमारी मायावती (अकबरपुर) : माननीय अध्यक्ष जी, अपनी पार्टी की ओर से इस सदन के उच्च पद पर मेरे समाज से ताल्लुक रखने वाले मेरे एक पढ़े-लिखे भाई यहां आसीन हुए हैं, इसके लिए मैं आपको बधाई देती हूं। मैं यह भी आपको स्पष्ट करना चाहती हूं, जब आपका इस पद के लिए चयन हुआ और प्रधान मंत्री जी आपको बधाई देते हुए, दलितों के बारे में बोल रहे थे और इस पद की गरिमा के बारे में बोल रहे थे, तो मैंने बीच में खड़े होकर माननीय प्रधान मंत्री जी से इस पद की गरिमा के बारे में उत्तर प्रदेश को ध्यान में रखकर कुछ पूछना चाहा था। लेकिन मुझे खेद के साथ कहना पड़ता है, जब मैं इस बात को पूछने के लिए खड़ी हुई, तो मुझे बोलने का मौका नहीं दिया गया। माननीय प्रधान मंत्री जी खड़े रहे। सदन की यह परम्परा रही है कि जब माननीय प्रधान मंत्री जी बोलतें हैं और तब कोई भी सदस्य बीच में कुछ पूछना चाहता है तो माननीय प्रधान मंत्री जी बैठ जाते हैं और स्पीकर महोदय की भी जिम्मेदारी बनती है कि उनकी बात को सुना जाए। ... *(व्यवधान)* मैं पहली बार संसद सदस्य बनकर नहीं आई हूं, मैं पहले भी संसद सदस्य रह चुकी हूं लोकसभा की और राज्य सभा की भी तथा देश के इस सबसे बड़े सदन की तो नहीं, लेकिन देश के सबसे बड़े प्रदेश, उत्तर प्रदेश, की दो बार मुख्यमंत्री भी रह चुकी हूं और सदन की नेता भी रह चुकी हूं। ... *(व्यवधान)* मुझे मालूम है, इस सदन के नेता को क्या जिम्मेदारी निभानी होती है। मुझे इस बात का एहसास है। माननीय अध्यक्ष जी, हमने जो वाक-आउट किया, वह आपके इस पद पर आसीन होने पर वाकआउट नहीं किया हैं बल्कि माननीय प्रधान मंत्री जी जो स्पीकर पद की गरिमा को लेकर कुछ बोल रहे थे, तो भारतीय जनता पार्टी की जो अध्यक्ष पद को लेकर दोगली नीति है, उस पर मैं कुछ कहना चाहती थी, लेकिन मेरी बात का जवाब नहीं दिया गया, इसलिए बहुजन समाज पार्टी ने वाकआउट किया। ... *(व्यवधान)**

[अनुवाद]

मानव संसाधन विकास मंत्री तथा विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्री (डा० मुरली मनोहर जोशी) : अध्यक्ष महोदय, वह इस सभा में उत्तर प्रदेश

---

*कार्यवाही वृत्तान्त में सम्मिलित नहीं किया गया।

विधान सभा के अध्यक्ष के व्यवहार के बारे में चर्चा नहीं कर सकती और ऐसी टिप्पणियों को कार्यवाही-वृत्तान्त में सम्मिलित नहीं किया जाना चाहिए। *(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : जी हां, इन टिप्पणियों को कार्यवाही वृत्तान्त में सम्मिलित नहीं किया जायेगा।

[हिन्दी]

कुमारी मायावती : अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से पूरे सदन को बताना चाहती हूं, कि माननीय प्रधान मंत्री जी ने कहा कि वे दलितों के हितैषी हैं यह सच नहीं है *(व्यवधान)* दलित समाज के लोगों पर जुल्म ज्यादती हो रही है। मैं समझती हूं कि इस सदन के उच्च पद पर हमारे समाज के भाई को बैठाकर, अगर आप सोच रहे हैं कि हम दलितों के वोट हासिल कर लेंगे, तो केवल उत्तर प्रदेश में ही नहीं, बल्कि पूरे देश में आपको दलितों की सहानुभूति मिलने वाली नहीं है। *(व्यवधान)* उत्तर प्रदेश के अन्दर दलितों की पार्टी को तोड़ने का काम किया है। *(व्यवधान)* आपको पूरा देश माफ नहीं करेगा *(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : महोदया, आप अध्यक्ष के स्वागत के बारे में ही बोलें।

*(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : इसे कार्यवाही-वृत्तान्त में सम्मिलित नहीं किया जायेगा।

[हिन्दी]

कुमारी मायावती : महोदय, जब प्रधान मंत्री जी बोलने के लिए खड़े हुए थे, दलितों के बारे में बात कह रहे थे, तो हमने वाकआउट किया, लेकिन अध्यक्ष जी हम आपका स्वागत करते हैं।

अपराह्न 6.00 बजे

(व्यवधान)

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : मैं श्रीमती कैलाशो देवी का नाम पुकार रहा हूं, न कि कुमारी मायावती को।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाईये। इसे कार्यवाही-वृत्तान्त में शामिल नहीं किया जायेगा। कृपया बैठ जाईये। मैंने श्रीमती कैलाशो देवी को अवसर दिया है, न कि आपको ?

*(व्यवधान)**

[हिन्दी]

श्रीमती कैलाशो देवी (कुरूक्षेत्र) : अध्यक्ष महोदय, हिन्दुस्तान विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है और हिन्दुस्तानी प्रजातंत्र में लोकसभा अध्यक्ष का पद अत्यंत ही महत्वपूर्ण है। आज मैं आपको इस महान लोकतंत्र के इतने महत्वपूर्ण पद पर आसीन होने पर तहेदिल से बधाई देती हूं और आपका हार्दिक स्वागत करती हूं। हमारी हरियाणा लोकदल राष्ट्रीय पार्टी ने इस पद के लिए आपका समर्थन किया। हमारी पार्टी द्वारा आपका समर्थन किये जाने में एक कारण आपका दलित वर्ग से संबंधित होना भी रहा है। आज कुछ लोगों ने कहा कि संगमा जी ने सदन का सफल संचालन किया, इस बात में कोई दो राय नहीं हैं। मगर मुझे पूर्ण विश्वास है और अटल अटूट भरोसा है कि आप संसद की गरिमा को ध्यान में रखते हुए भारतीय लोकतंत्र की रक्षा के लिए बड़ी से बड़ी कीमत अदा करने में कभी पीछे कदम नहीं हटाएंगे। हिन्दुस्तान में लोकतंत्र कभी खत्म नहीं हो सकता, हिन्दुस्तान में लोकतंत्र का भविष्य उज्ज्वल है यह बात आप साबित कर देंगे। आप हिन्दुस्तान की पंचायती राज संस्था के, जिला परिषद के अध्यक्ष भी रहे हैं। आप भली भांति जानते हैं कि हिन्दुस्तान की 80 प्रतिशत जनता गांवों में रहती है। बापू जी का सपना ग्राम स्वराज का था, इसलिए बापू जी ने पंचायती राज को अहमियत देते हुए पंचायती राज को लागू करवाने का सपना देखा था। लेकिन आज इस हिन्दुस्तान में कई ऐसे राज्य हैं जहां पंचायती राज संस्थाओं को एक प्रतिशत भी वित्तीय और प्रशासकीय अधिकार नहीं है। इसलिए आप सबसे पहले इस कुर्सी को सुशोभित करते हुए यह काम करेंगे। पंचायती राज संस्थाओं को पूरे तौर से एक्ट के मुताबिक वित्तीय और प्रशासकीय अधिकार दिलाने में जी-जान से कार्य करेंगे ताकि बापू जी का वह सपना साकार हो सके, नहीं तो बापू जी की आत्मा को कभी शांति नहीं मिलेगी उनकी आत्मा भटकती रहेगी। आपने आजादी की 50वीं वर्षगांठ के बाद इस पद को संभाला है और जिस मकसद को लेकर आजादी हासिल की गई थी, जिस उद्देश्य को लेकर कई लोग फांसी पर चढ़े थे आज भी वह उद्देश्य पूरा नहीं हुआ है। आज भी हिन्दुस्तान में भयंकर आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक गुलामी है।

अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे पुरजोर अपील करती हूं कि हिन्दुस्तान के लोकतंत्र में, यहां की 80 प्रतिशत गरीब जनता को न्याय दिलाने के लिए आप अपने पद की गरिमा को बरकरार रखते हुए कार्य करें। आज हमें इन शीशे की दीवारों में और इन संगमरमर के मकानों में बैठ कर उस 80 प्रतिशत जनता को नहीं भूल जाना चाहिए जिन्होंने हमें इस आशा और विश्वास के साथ यहां इस संसद में चुन कर भेजा है कि ये हमारे साथ न्याय करेंगे, हमारे हितों की रक्षा करेंगे। इन्हीं शब्दों के साथ मैं आपको इस पद पर सुशोभित होने पर फिर से हार्दिक बधाई देती हूं।

[अनुवाद]

श्री आर०एस० गवई (अमरावती) : महोदय, रिपब्लिकन पार्टी आफ इंडिया की ओर से मैं इस उच्च पद पर आपकी नियुक्ति के लिए आपको हार्दिक बधाई देता हूं।

महोदय, भारत विश्व में सच्चे अर्थ में सबसे बड़ा लोकतंत्र है। भारत में लोकतंत्र के भविष्य के संबंध में प्रकाशित अनेक लेखों से यह आशा व्यक्त होती है कि हम उचित तरीके से कार्य कर रहे हैं। एक वह दिन था जब भारत के संविधान के मुख्य निर्माता, डा० बाबासाहेब अम्बेडकर ने 'एक व्यक्ति, एक वोट और एक मूल्य' का प्रस्ताव किया था। भारत में और भारत के बाहर श्री चर्चिल सहित अनेक आलोचकों ने कहा था: ''खेद है डा० बी०आर० अम्बेडकर द्वारा अपनाया गया 'एक व्यक्ति, एक वोट और एक मूल्य' का फार्मूला - क्या यह लोकतंत्र के सार के रूप में सफल होगा अथवा नहीं? ''डा० बी०आर० अम्बेडकर द्वारा चर्चिल को दिया गया उत्तर यह था, 'मुझे आशा है कि भारत में लोकतंत्र का विकास होगा। इसमें दस वर्ष, बीस वर्ष अथवा पचास वर्ष का समय लगेगा।' भारत के संविधान के पूर्वज ने प्रजा अर्थात इस देश के नागरिकों में विश्वास व्यक्त किया था। अन्ततः अनेक उतार-चढ़ावों के द्वारा हमने सिद्ध कर दिया है कि हमारा देश सबसे बड़ा लोकतंत्र है।

---

*कार्यवाही वृत्तान्त में सम्मिलित नहीं किया गया।

[श्रीमती आर०एस० गवई]

आप सबसे बड़े लोकतंत्र के प्रतीक हैं। एक राजनैतिक विचारक ने संसद के संबंध में एक टिप्पणी की है : वे कहते है, 'संसद क्या है? संसद कुछ नहीं है अपितु, लोकतंत्र का एक पवित्र मन्दिर है।' संसद में क्या है? यह *प्रजा सत्ता* है।' इस देश के लोग देवता और देवियां हैं। वे हमारे और आपके बारे में क्या कहते हैं? हमें भक्त माना गया है, हम जनता के प्रतिनिधि है और जनता की सेवा के लिए हैं।

आप सम्पूर्ण सदन के संरक्षक हैं, न कि केवल उस दल अथवा उन सदस्यों के, जिन्होंने आपके नाम का प्रस्ताव किया है और अनुमोदन किया है। मेरी बहिन कुमारी मायावती को गलत समझा गया है। उनका कहने का तात्पर्य यह है कि अनुसूचित जाति से सबंद्ध किसी व्यक्ति को उच्च पद दे देने से ही उद्देश्य पूरा नहीं हो जाता। यह तो सत्ता पक्ष अथवा विपक्ष की ओर से दिखावा मात्र हैं समस्या यह है कि हम उन्हें उच्च स्थान दे रहे हैं परन्तु समाज के कमजोर वर्गों, अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों की वास्तविक समस्याओं से दूर हो रहे हैं। दुर्भाग्य की बात है कि श्री वी०पी० सिंह के कार्यकाल के पश्चात से उनके लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम संबंधी नहीं है। कोई सामाजिक एजेंडा नहीं है।

मैं आपका सम्मान क्यों करूं? केवल इसलिए नहीं कि आप अनुसूचित जाति से संबंध रखते हैं। परन्तु जैसाकि विपक्ष के नेता, श्री शरद पवार ने ठीक ही कहा है कि आपको जिला परिषद और पंचायत समितियों में अच्छी सेवा का काफी अनुभव हैं आपने मंत्री के रूप में कार्य किया है केवल इसलिए नहीं कि आप अनुसूचि जाति से संबंध रखते हैं अपितु इसलिए कि आप इसके पात्र थे।

क्या हमारे कहने का तात्पर्य यह है कि क्या महामहिम, श्री के०आर० नारायणन की नियुक्ति — उन्हें हमारी आजादी के पचासवें वर्ष में भारत के राष्ट्रपति के रूप में निर्वाचित किया गया — केवल इसलिए नहीं की गई कि वे अनुसूचित जाति से संबंध रखते हैं? नहीं। ऐसा इसलिए किया गया क्योंकि वे इसके योग्य हैं। उन्होंने अपनी योग्यता सिद्ध कर दी हैं अत:, आप इस गलत धारणा में न रहें कि इस पद पर आपकी नियुक्ति इसलिए की गई है कि आप अनुसूचित जाति से संबंध रखते हैं, अपितु इसलिए की गई है कि आपके अन्दर योग्यता हैं आपको इसमें और विकास करना है और साबित करना है कि हम इतने ही सक्षम हैं।

राजनैतिक लोकतंत्र का एक सार 'चर्चा के द्वारा निर्णय' है। लोकतंत्र का यही सार है। यदि आप उसे बैठने के लिए कहने के बजाय कुमारी मायावती को बोलने का अवसर दे सकते तो इसमें कुछ गलत नहीं होता। यही लोकतंत्र का सार है। इसलिए, चर्चा पर कोई प्रतिबंध नहीं होना चाहिए।

अध्यक्ष महोदय : कृपया अपनी बात समाप्त कीजिए।

श्री आर०एस० गवई : महोदय, हम यहां किस लिए आये हैं? हमारे यहां नियम और प्रक्रियाएं हैं। सदन में भारत के लोगों की समस्याओं पर विचार-विमर्श करने के लिए ध्यानाकर्षण प्रस्ताव, प्रश्न काल, और स्थगन प्रस्ताव जैसी प्रक्रियाओं वाली कार्यप्रणाली है। आप केवल सभा के ही संरक्षक नहीं हैं अपितु अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों, अन्य पिछड़े वर्गों और अल्प संख्यकों से संबंधित समस्याओं के लिए उन्हें आपको न्याय भी देना होगा। आपको यह भी देखना है कि धर्मनिरपेक्षता और राष्ट्रीय अखंडता को सुदृढ़ किया जाए। आप अब लोकतंत्र के प्रतीक बन गए हैं। मैं अपनी पार्टी, रिपब्लिकन पार्टी आफ इंडिया की ओर से आपको पुन: बधाई देता हूं और हमारी ओर से पूर्ण सहयोग का आश्वासन देता हूं।

[हिन्दी]

श्री जी०एम० बनातवाला (पोन्नानी) : **मोहतरम स्पीकर साहब, इस पुरवकार अवामी ऐवान ने आपको स्पीकर के ओहदे पर फाइज किया है। मैं अपनी जानिब से और अपनी पार्टी मुस्लिम लीग की जानिब से** आपको मुबारकबाद पेश करता हूं। इस ऐवान की शानदार रिवायत रही है और यह एक खुली हकीकत है कि स्पीकर ... *(व्यवधान)* मोहतरम स्पीकर जम्हूरियत का मुहाफिज और पार्लिमानी रिवायत, पार्लिमानी शान, पार्लिमानी कवाइद और जवाबित का पासवां होता हैं लोकतंत्र और संसदीय प्रक्रिया के संरक्षक। हम आपसे यही उम्मीद रखेंगे कि आप इस पार्लिमानी शान को बरकरार रखेंगे और इस ऐवान को उसकी शानदार रिवायात और उसके शानदार कवाइद और जवाबित के मुताबिक चलाएंगे और में अपना नाम भी रोशन करेंगे।

जनाब स्पीकर साहब, हमें यह हुकूमत पसन्द हो या न हो लेकिन यह हाउस, यह ऐवान पूरी शान और कवायद तथा जवाबित के मुताबिक चलना चाहिए ताकि डैमोक्रेटिक वर्ल्ड और जम्हूरी दुनिया में हिन्दुस्तान की जम्हूरियत का नाम और भी ज्यादा रोशन हो। हिन्दुस्तान जो कि एक बस जम्हूरी मुल्क है, उसकी जम्हूरित की आन, शान और उसकी कद्र के अन्दर मजीद इजाफा हो लिहाजा हमारा तमामतर तावून, कोआपरेशन आपके साथ रहेगा। इस मकसद की खातिर रहेगा कि यह ऐवान कवायद के साथ, जवाबित के साथ, अपनी रिवायात के साथ, अपनी शान के साथ चलता रहे।

स्पीकर साहब, आप जरा इस ऐवान पर एक नजर डालिए। अपनी तशकील में इसका तवाजुम बहुत ही नाजुक है। यह अत्याधिक नानुक संतुलित सदन है इस वजह से आपकी जिम्मेदारियां और भी ज्यादा बढ़ जाती हैं। मैं समझता हूं कि मावलंकर साहब से लेकर आज तक जितने ऐवान आए, उन तमाम के अन्दर यह ऐवान एक नाजुक तरीम सूरत-ए-हाल को पेश करते हुए आपका एक सख्त आजमाइश के अन्दर मुब्तला करता है। हम यह चाहेंगे कि आप अपनी इस आजमाइश के अंदर कामयाब हों और उसके लिए हमारा तावुन आपके साथ रहेगा।

मैं एक बात और वाजे तौर पर कहना चाहता हूं। जब आपको मुबारकबाद इतनी शान के साथ दी जा रही है ... *(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : नहीं नहीं, हमें इसे छः बजे तक अवश्य पूरा करना था। अब 6.15 हो चुके हैं। कृपया समाप्त कीजिए।

[हिन्दी]

श्री जी०एम० बनातवाला : मैं एक बात कहकर अपनी बात खत्म करूंगा। यहां पर छोटी-छोटी पार्टियां भी हैं इस बात को याद रखियेगा और ध्यान में रखियेगा कि ये पार्टियां हमारी जम्हूरियत की आबरू हैं। अगर इन छोटी-छोटी पार्टियों को दबाया गया तो हमारी जम्हूरियत की शान पर आंच आएगी। मुझे यकीन है कि आपकी सदारत में इस ऐवान के ऊपर और उसकी शान पर कोई आंच नहीं आने पायेगी और इन छोटी-छोटी पाटियों के साथ भरपूर इंसाफ किया जाएगा।

स्पीकर साहब, इससे पहले कि मैं अपनी गुफ्तगू खत्म करूं, मुझे कहना है कि यह 12वीं लोक सभा है। 11वीं लोक सभा में श्री संगमा हमारे स्पीकर थे। उनकी काबिले कद्र कारकर्दगी का जिक्र किये वगैर हर गुफ्तगू नातमाम रहेगी। हम उनके बड़े ममनून हैं कि उन्होंने जम्हूरियत की शान को आगे बढ़ाया और इन्तहाई नाजुक हालात में और बहरानी कैफियत के अंदर भी पूरी कुर्दबारी के साथ दूरी दानिशमन्दी के साथ, पूरी समझदारी के साथ इस हाउस को चलाया है जिसकी हम इन्तहाई कद्र कहते हुए उन्हें भी मुबारकबाद पेश करेंगे। हम उस दिन का भी ख्याल रखेंगे ... *(व्यवधान)*

मैं आपको मुबारकबाद पेश करता हूं और इस ऐवान को जाब्ते के साथ चलाने में अपनी और अपनी पार्टी के तावुन और कोआपरेशन का यकीन दिलाता हूं।

[شری جی ایم بناتوالا (پونّانی) : محترم اسپیکر صاحب، اس پُروقار عوامی ایوان نے آپکو اسپیکر کے عہدے پر فائز کیا ہے۔ میں اپنی جانب سے اور اپنی پارٹی مسلم لیگ کی جانب سے، آپکو مبارکباد پیش کرتا ہوں۔ اس ایوان کی شاندار روایت رہی ہے اور یہ ایک کھلی حقیقت ہے کہ اسپیکر...

(مداخلت) محترم اسپیکر، جمہوریت کا محافظ اور پارلیمانی روایت، پارلیمانی شان، پارلیمانی قوائد و ضوابط کا custodian of democracy and Parliamentary practice پاسباں ہوتا ہے ہم آپ سے یہی اُمید رکھیں گے کہ آپ اس پارلیمانی شان کو برقرار رکھیں گے اور اس ایوان کو اسکی شاندار روایت اور اسکے شاندار قوائد و ضوابط کے مطابق چلائیں گے اور اسمیں اپنا نام بھی روشن کریں گے۔

جناب اسپیکر صاحب، ہمیں یہ حکومت پسند ہو یا نہ ہو لیکن یہ ہاؤس، یہ ایوان پوری شان اور قوائد و ضوابط کے مطابق چلنا چاہئے تاکہ ڈیموکریٹک ورلڈ اور جمہوری دُنیا میں ہندوستان کی جمہوریت کا نام اور بھی زیادہ روشن ہو۔ ہندوستان جو کہ ایک بڑا جمہوری ملک ہے، اسکی جمہوریت کی آن، شان اور اسکی قدر کے اندر مزید اضافہ ہو لہٰذا ہمارا تمام تر تعاون آپکے ساتھ رہے گا۔ اس مقصد کی خاطر رہیگا کہ یہ ایوان قوائد کے ساتھ، اپنی روایت کے ساتھ، اپنی شان کے ساتھ چلتا رہے۔

اسپیکر صاحب، آپ ذرا اس ایوان پر ایک نظر ڈالیے۔ اپنی توازن بہت ہی نازک ہے۔ It is a very delicately balanced House. اس وجہ سے آپکی ذمے داریاں اور بھی زیادہ بڑھ جاتی ہیں۔ میں سمجھتا ہوں کہ ماؤلنکر صاحب سے لیکر آج تک جتنے ایوان آئے، اُن تمام کے اندر یہ ایوان ایک نازک ترین صورتحال کو پیش کرتے ہوئے آپکو ایک سخت آزمائش کے اندر مبتلا کرتا ہے۔ ہم یہ چاہیں گے کہ آپ اپنی اس آزمائش کے اندر کامیاب ہوں اور اسکے لئے ہمارا تعاون آپکے ساتھ رہے گا۔

میں ایک بات اور واضح طور پر کہنا چاہتا ہوں۔ جب آپکو مبارکباد اتنی شان کے ساتھ دی جا رہی ہے...(مداخلت)

MR. SPEAKER: No, no. We must have completed it by six O'clock. It is already 6.15 P.M. now. So, please conclude.

شری جی ایم بناتوالا (پونّانی) : میں ایک بات کہہ کر اپنی بات ختم کرونگا۔ یہاں پر چھوٹی چھوٹی پارٹیاں بھی ہیں اس بات کو یاد رکھیئے کہ یہ پارٹیاں ہماری جمہوریت کی آبرو ہیں۔ اگر ان چھوٹی چھوٹی پارٹیوں کو دبایا گیا تو ہماری جمہوریت کی شان پر آنچ آئیگی۔ مجھے یقین ہے کہ آپکی

صدارت میں اس ایوان کے اوپر اور آپکی شان پر کوئی آنچ نہیں آنے پائیگی اور ان چھوٹی پارٹیوں کے ساتھ بھرپور انصاف کیا جائیگا۔

اسپیکر صاحب، اس سے پہلے کہ میں اپنی گفتگو ختم کروں، مجھے کہنا ہے کہ یہ بارہوں لوک سبھا ہے۔ گیارہویں لوک سبھا میں جناب سنگما ہمارے اسپیکر تھے۔ انکی قابل قدر کارکردگی کا ذکر کیے بغیر ہر گفتگو نا تمام رہیگی۔ ہم انکے بڑے ممنون ہیں کہ انہوں نے جمہوریت کی شان کو آگے بڑھایا اور انتہائی نازک حالات میں اور دوہرانی کیفیت کے اندر بھی پوری بردباری کے ساتھ پوری دانشمندی کے ساتھ، پوری سمجھداری کے ساتھ اس ہاؤس کو چلایا ہے جسکی ہم انتہائی قدر کرتے ہوئے انہیں بھی مبارکباد پیش کریں گے۔ ہم اس دن کا بھی خیال رکھیں گے... (مداخلت) (بحرانی)

میں آپکو مبارکباد پیش کرتا ہوں اور اس ایوان کو ضابطے کے ساتھ چلانے میں اپنی اور اپنی پارٹی کے تعاون اور کو آپریشن کا یقین دلاتا ہوں۔]

[अनुवाद]

श्री वैको (शिवाकाशी) : माननीय अध्यक्ष महोदय, उच्च पद पर निर्वाचित होने पर मोरनालार्ची डी०एम०के० तथा अपनी ओर से भी आपको हार्दिक बधाई देते हुए और आपका स्वागत करते हुए मुझे अत्याधिक प्रसन्नता हो रही है।

महोदय, स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से आधी शताब्दी बीत चुकी है। आज आपके सार्वजनिक जीवन का बड़ा ही महत्वपूर्ण दिन हैं आप इस सम्मानीय सभा के रक्षक, विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र की लोकसभा के अध्यक्ष के रूप में निर्वाचित हुए हैं जिससे उन करोड़ों लोगों को आशा और विश्वास का संदेश मिलेगा जो अनेक शताब्दियों से उत्पीड़ित होते रहे हैं। यह राष्ट्रपिता को सही श्रद्धांजलि होगी।

महोदय, मुझे विश्वास है कि दसवीं लोकसभा में संसदविद् के रूप में, आंध्र प्रदेश के जिला परिषद् के अध्यक्ष के रूप में तथा अपने राज्य में मंत्री के रूप में आप अपने अनुभव से सभा में किसी भी तरह के हंगामे की स्थिति से निपट सकेगें।

श्री येरननायडू जब आपके जीवनकाल का उल्लेख कर रहे थे, तो उन्होंने बताया था कि आप विधि कॉलेज के विद्यार्थी नेता थे। अत:, आप किसी भी तरह के हंगामे की स्थिति से निपट सकते हैं जैसाकि हमने कुछ मिनट पहले देखा है।

कुछ लोग कहते हैं कि लोगों ने पूर्ण जनमत नहीं दिया है। ऐसी बात नहीं है। लोगों ने भाजपा तथा इसके सहयोगी दलों को सरकार बनाने हेतु निश्चित जनमत दिया है। लोगों ने श्री अटल बिहारी वाजपेयी को देश का नेतृत्व करने हेतु जनमत दिया है।

मैं चाहता हूं कि आप इस सभा के नेता श्री वाजपेयी को इस देश के प्रधान मंत्री के रूप में रखते हुए, पांच वर्षों के पूर्ण कार्यकाल के लिए सदस्यों के अधिकारों के साथ सभा की प्रतिष्ठा, शिष्टाचार तथा समृद्ध परम्पराओं की सुरक्षा करेंगे। हम अपनी ओर से आपको सभा के संचालन हेतु अपना पूर्ण सहयोग देंगे।

मैं उस ओर बैठे अपने मित्रों से भी ऐसा ही सहयोग देने की अपील करूंगा। मैं माननीय श्री इंद्रजीत गुप्त द्वारा व्यक्त किए गए इन विचारों से सहमत हूं कि करोड़ो लोग देख रहे हैं कि, आज लोकसभा में क्या हो रहा है। सम्पूर्ण विश्व हमें देख रहा है। अत:, हमें आत्मनिरीक्षण करना है।

इन शब्दों के साथ मैं पुन: आपको बधाई देता हूं। मैं कामना करता हूं कि आप अपने प्रयास में सफल हों।

श्री अमर राय प्रधान (कूचबिहार) : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपको अपने दल की ओर से तथा अपनी ओर से इस अवसर पर बधाई देता हूं कि आप अध्यक्ष के पद पर पहुंच गए हैं। जब मैं आपको बधाई दे रहा हूं तो मैं ग्यारहवीं लोकसभा के अध्यक्ष को भूल नहीं सकता जिन्होंने बहुत अच्छी तरह से सभा की कार्यवाही चलाई।

यह कहना सही नहीं है कि आप निर्विरोध अथवा सर्वसम्मत उम्मीदवार हैं। यह अध्यक्ष के निर्वाचन का प्रश्न है। जब चुनाव होता है, तो यह स्वभाविक है कि आप एक ओर से होंगे और हमारी ओर से दूसरा उम्मीदवार होगा। हमने आपका विरोध किया। परंतु फिर भी आप इस सभा के रक्षक हैं जब आपमें पक्षपात की भावना नहीं है। अब आप इस सभा के निष्पक्ष रक्षक है।

इस संबंध में, मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि आप अपने दाएं, बाएं और अपने सामने देखें। आप कृपया पीछे बैठे सदस्यों तथा हमारे जैसे छोटे दलों को भी देखें। सतारूढ़ दल को यह बात ध्यान में रखनी होगी कि वर्ष 1984 में उनकी संख्या केवल 'दो' थी। यह लोकतंत्र है। वे इस ओर से अब दूसरी ओर गए हैं। अत:, माननीय अध्यक्ष महोदय, लोकतंत्र में, मेरे विचार से आपको यह कार्य भी करना होता है। मुझे आशा है कि आप

इस प्रतिष्ठा को बनाए रखेंगे। मैं आपके स्वास्थ्य की कामना करता हूं।

श्री पी० चिदम्बरम (शिवगंगा) : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं अपने दल, टी०एम०सी० की ओर से आपका स्वागत करता हूं और बधाई देता हूं। सभा के सभी सदस्यों को जल्दी ही पता चल जाएगा कि आपने असाधारण स्वागत के साथ अध्यक्ष का पद ग्रहण किया है।

स्वागत असाधारण रहा है क्योंकि आप अनेक तरह से एक असाधारण उम्मीदवार हैं और यह निर्वाचन एक असाधारण निर्वाचन था। जब आपकी उम्मीदवारी घोषित की गई, तो आपने हमारा समर्थन नहीं मांगा, फिर भी आपको बधाई देते हुए हमें प्रसन्नता हो रही है।

महोदय, हम सभी समय तथा परिस्थितियों के आगे सीमा में बंधे हुए हैं। लोकसभा का प्रत्येक सदस्य और निःसंदेह आप भी पांच वर्ष की अनाधिक अवधि के लिए निर्वाचित हुए हैं। आज हम अवधि के लिए निर्वाचित हुए हैं। आज हम जो कुछ कहेंगे वह इतिहास नहीं बनेगा वरन् जब प्रत्येक सदस्य पदत्याग करेगा, उस समय जो कुछ वह कहेगा, इतिहास बनेगा।

महोदय, मैं एक तमिल पद्य उद्धृत करना चाहता हूं।

''थाकर थाविलार इनबाधु
अवरावर इचाथाल कनापाडुम''

वे कितने महान हैं अथवा कितने महान नहीं है, इस बात का निर्धारण उन चीजों से किया जाएगा जो वे अपने पीछे छोड़ गए हैं। आपने हमारे पूर्वाधिकारियों को दी गई श्रद्धांजलियों को सुना है। मैं आशा करता हूं कि आप इस सभा के सदस्यों के अधिकारों की सुरक्षा करेंगे, इस सभा की महान परम्पराओं को बनाए रखेंगे और आपको हमारा सहयोग ही नहीं वरन् हमारे सदभाव और आभार को जीतेंगे।

महोदय, मैं अपने दल की ओर से आपकी सफलता, बेहतर स्वास्थ्य की तथा इस सभा के संचालन के लिए आवश्यक सभी बातों की कामना करता हूं। मेरा दल आपको बधाई देता है।

प्रो० सैफुद्दीन सोज़ (बाटामूला) : अध्यक्ष महोदय, मैं अपनी ओर से तथा अपने दल, जम्मू-कश्मीर नेशनल कांफ्रेंस की ओर से माननीय प्रधान मंत्री, विपक्ष के नेता तथा अनेक संसद सदस्यों, जिन्होंने आपको इस प्रतिष्ठित पद पर आसीन होने पर बधाई दी है, के साथ जोड़ता हूं।

मेरे विचार से, यह वांछनीय होता यदि इस पद पर चुनाव सर्वसम्मति से होता। जहां तक मुझे जानकारी है, वास्तव में परसों रात तक आम सहमति बनती जा रही थी किन्तु कल सुबह यह नहीं बन सकी। अब जबकि आप इस पद पर सुशोभित हैं, मैं माननीय सदस्यों के साथ न केवल आपको बधाई देता हूं वरन् भविष्य में अपने दल की ओर से पूर्ण सहयोग का आश्वासन देता हूं।

मैं उन लोगों से सहमत नहीं हूं जो कि इस उच्च पद पर सुशोभित अध्यक्ष को अपनी सलाह देते हैं। मेरा अनुभव है कि कोई भी व्यक्ति जो कि इस पद पर होता है उसकी अपनी कार्यशैली होती है। मैंने इस पद पर डा० बलराम जाखड़, श्री शिवराज पाटिल तथा श्री संगमा को देखा हैं उन सभी की कार्य करने की अपनी-अपनी शैली थी। अतः माननीय अध्यक्ष को यह परामर्श देने की आवश्यकता नहीं है कि वह सभा का संचालन किस तरह से करें।

महोदय, मेरें मन में एक विचार है जिसे मैं आपके समक्ष रखना चाहता हूं वो यह है कि सदन को चलाने के लिए क्या-क्या आवश्यक हैं। श्री संगमा ने हमें अकसर याद दिलाया कि हमारी कार्यवाही दूरदर्शन पर सीधे प्रसारण प्रसारित की जा रही हैं। आज विश्व इतना छोटा हो गया है कि इससे पूर्व कि दूरदर्शन, भारत में किसी चीज का प्रसारण करे, स्टार टी०वी० अथवा जी०टी०वी० इसका प्रसारण कर देगें।

हमें उत्तरदायी बनना होगा और हम उत्तरदायित्व की भावना रखते भी हैं। कभी-कभी लोकसभा में कटु शब्द नये रंग भर देते हैं। किन्तु हम में से कुछ सदस्य कई बार रेखा का उल्लघंन कर देते हैं। ऐसे अवसर पर हमें क्या करना चाहिए ?

मेरा आपसे अनुरोध है कि आप आत्म-अनुशासन की परम्परा को विकसित करने कि दिशा में प्रयास करें। मैं मेरा दल, विशेषकर मैं स्वयं, तथा मेरे साथी आपको यह आश्वासन देते हैं कि हम आत्म अनुशासन को विकसित करने में आपको सहयोग देंगें। जब मैं आत्म-अनुशासन की बात करता हूं तो मुझे एक शेर याद आता है और अपना भाषण समाप्त करने से पूर्व मैं इसे उद्धृत करना चाहता हूं :

फूल की पत्ती से कट सकता है हीरे का जिगर,
मर्दे नादां पर सलामे नरम व नाजूक बेअसर।

پھول کی پتی سے کٹ سکتا ہے ہیرے کا جگر
مرد ناداں پر سلام نرم و نازک بے اثر

सदस्य जो कुछ कहना चाहता है, उस पर अध्यक्ष की अपील, सम्भव है कि सदैव असरदार ना हों। अध्यक्ष को आत्म-अनुशासन की जागृती में हम सभी का नेतृत्व करना चाहिए। मैने इस कारण से ही इस शेर का उल्लेख किया है।

इससे पूर्व कि मैं अपना भाषण समाप्त करूं, श्री संगमा द्वारा इस पद पर रहते हुए निष्पक्षता और सत्यनिष्ठा के उच्च स्तर का उल्लेख करना चाहता हूं। यह सब बाते वाद-विवाद में सम्मिलित की जा रही हैं। यह कोई गुप्त बात नहीं है कि हम में से अधिकांश श्री संगमा को अध्यक्ष पद के लिए आम सहमति का उम्मीदवार बनाना चाहते थे। अब यह एक खुला रहस्य है। अब जबकि आप इस गरिमामय पद को सुशोभित कर रहे हैं, मुझे इसमें कोई आशंका नहीं है कि आप अपने सामर्थ्य को सिद्ध करेंगे तथा इस सभा को कुशल नेतृत्व प्रदान करने में सक्षम होंगे। मैं आपके सुखद की कामना करता हूं।

अध्यक्ष महोदय : इस समय सायं के 6.30 बज चुके हैं। मेरे समक्ष दो नाम और हैं। क्या मैं इन दो सदस्यों को भी बोलने का अवसर दूं? मैं समझता हूं कि इसमें 20 मिनट और लगेगें।

अनेक माननीय सदस्य : हां श्रीमन्।

श्री के० बापीराजू (नरसापुर) : महोदय, मैं इस सभा का नया सदस्य हूं। मैंने आज ही शपथ ली है और आपने मुझे बधाई देने का अवसर प्रदान किया है। हमने हैदराबाद से दिल्ली तक की यात्रा एक साथ की हैं आप भाग्यशाली हैं कि अंतिम क्षणों में अपना नामांकन-पत्र भर कर इन प्रतिष्ठित पद पर आसीन हुए हैं। मैं यह मानता हूं कि भगवान ने आपको आर्शीवाद दिया है। यह एक चमत्कार है कि आप अपना नामांकन पर्चा अंतिम समय में भरने में सफल हुए। मैं समझता हूं कि भारतीय जनता पार्टी तथा आपका दल तेलगूदेशम ने आपको अध्यक्ष पद पर चुने जाने में सक्रिय योगदान किया है।

मैं अपने विचार यहां रखना चाहता हूं। मैं उस राज्य, जिससे आप हैं का दो दशकों तक विधान सभा का सदस्य रहा हूं। मैं अत्यन्त सावधानी बरतना चाहता हूं क्योंकि मैं अपनी सीमा जानता हूं। अपने राजनैतिक जीवन में मैंने कभी भी अपनी सीमाओं का उल्लंघन नहीं किया है। किन्तु आज हमारे देश के राजनैतिक वातावरण से लाग क्षुब्ध हैं।

[श्री के० बापीराजू]

हमें जिन सम्मानित पदों के प्रति नतमस्तक रहना चाहिए, आज उनके प्रति सम्मान में कमी आई है। हमें समाज और प्रत्येक व्यक्ति के प्रति सम्मान की भावना विकसित करनी चाहिए।

मैं यहां श्री संगमा के बारे में बोलना चाहूंगा। संसद में, कद में सबसे छोटे व्यक्ति होने के बावजूद उन्होंने वटवृक्ष की भांति ऊंचाइयों को छूआ। मैं यह देख रहा था कि श्री संगमा जो अध्यक्ष पद के सर्वसम्मत उम्मीदवार नहीं पाए, आपको निश्छल मुस्कान के साथ मुबारकबाद दे रहे थे। यह उनका गुण है। वह मुस्कराकर अपनी शुभकामनाएं आपको दे रहे थे और मैं आशा करता था कि आपके चेहरे पर भी वैसी ही मुस्कान होती। महोदय, आप भी मुस्कुराइये। मुस्कराने के लिए आपको कुछ नहीं देना पड़ता बल्कि इससे आपको कुछ मिलता ही है।

अध्यक्ष महोदय : उसके लिए आगे बहुत समय मिलेगा।

श्री के० बापीराजू : अंत में, मैं लंबा भाषण नहीं देना चाहता। मेरी ओर से आपको शुभकामनाएं। ईश्वर आपकी सहायता करे। राजनीति में कोई कत्ल नहीं होते और केवल आत्महत्याएं होती हैं। आप उस संस्था को किस प्रकार उठाना चाहते हैं यह आपके ऊपर निर्भर करता है। आप श्री शिवराज पाटील का उदाहरण लीजिए, वह अच्छे व्यक्ति हैं। डा० बलराम जाखड़ को ही लीजिए। वह निपुण अध्यक्ष थे। श्री संजीवा रेड्डी, जो केवल दसवीं कक्षा पास थे, बेहतरीन अध्यक्ष साबित हुए। आप उन्हें सामने रखकर राष्ट्र की राज्य की तथा इस पद की, जिस पर आप विराजमान हैं, की प्रतिष्ठा बढ़ायें।

[हिन्दी]

श्री एस०एस० ओवैसी (हैदराबाद) : जनाबे स्पीकर साहब, मैं आपको स्पीकर के ओहदे पर मुकर्रर होने पर मुबारकबाद पेश करता हूं क्योंकि यह एक रस्मे दुनिया है, रियायते पार्लियामेंट भी है, क्योंकि हर आने वाले के लिए नेक तवोकात का इज़हार और जो जाता है उसके लिए अच्छे कलमात। लेकिन आज लोग ऐसे कुछ काम छोड़ जाते हैं जिनकी याद हमारे दिलों में बाकी रहती है। संगमा साहब उन्हीं लोगों में से हैं। मैं ज्यादा ऐवान का वक्त लेना नहीं चाहता लेकिन इस हकीकत का इजहार करे बगैर भी नहीं रह सकता कि नई हुकुमत आने के बाद यहां की सबसे बड़ी मजहबी अकलियत मुसलमानों में तशवीश है और मुझे तवक्को है कि आप इनके मसाइल के हल के लिए मौके फारहम करेंगे कोई ऐसी चीज न होने पाए और न कोई ऐसी बात होने पाए जिससे यहां की अकलियत यह समझे कि हमारे मसाइल जमहूरी तरीके से हल नहीं हो सकते।

मैं आपसे तवक्को करता हूं कि आप इस बात को महसूस करेंगे और फिर एक बार मैं आपको मुबारकवाद पेश करता हूं।

[**جناب سلطان صلاح الدین اُویسی (حیدرآباد) :** جناب اسپیکر صاحب، میں آپکو اسپیکر کے عہدے پر مقرر ہونے پر مبارکباد پیش کرتا ہوں کیونکہ یہ ایک رسمِ دُنیا ہے، روایتِ پارلیمنٹ بھی ہے، کیونکہ ہر آنے والے کے لئے نیک توقعات کا اظہار اور جو جاتا ہے اسکے لئے اچھے کلمات۔ لیکن بعض لوگ ایسے کچھ کام چھوڑ جاتے ہیں جسکی یاد ہمارے دلوں میں باقی رہتی ہے۔ سنگما صاحب انہی لوگوں میں سے ہیں۔ میں زیادہ ایوان کا وقت لینا نہیں چاہتا لیکن اس حقیقت کا اظہار کرے بغیر بھی نہیں رہ سکتا کہ نئی حکومت آنے کے بعد یہاں کی سب سے بڑی مذہبی اقلیت مُسلمانوں میں تشویش ہے اور مجھے توقع ہے کہ آپ انکے مسائل کے حل کے لئے مواقع فراہم کریں گے اور کوئی ایسی چیز نہ ہونے پائے اور نہ کوئی ایسی بات ہونے پائے جس سے یہاں کی اقلیت یہ سمجھے کہ ہمارے مسائل جمہوری طریقے سے حل نہیں ہو سکتے۔

میں آپ سے توقع کرتا ہوں کہ آپ اس بات کو محسوس کریں گے اور پھر ایک بار میں آپکو مبارکباد پیش کرتا ہوں۔ شکریہ!]

[अनुवाद]

श्री बी०एम० मेनसिंकाई* (धारवाड़ दक्षिण) : श्रीमान अध्यक्ष महोदय, लोक शक्ति दल की ओर से, मैं इस शुभ अवसर पर आपका अभिनंदन करता हूं और बधाई देता हूं। महोदय, मुझे अत्यन्त खुशी है कि आपको इस पावन सदन को उस सम्मानजनक पद हेतु चुना गया है। हमारी पार्टी सदन की कार्यवाही चलाने में आपको पूरा सहयोग देगी। आप कर्नाटक के एक पड़ोसी राज्य आन्ध्र प्रदेश से निर्वाचित होकर आये हैं। माननीय

---

*मूलत: कन्नड़ में दिये गए भाषण के अंग्रेजी अनुवाद का हिन्दी रूपान्तर।

अध्यक्ष के पद पर आपकी नियुक्ति मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई है।

आपको बधाई देते हुये, कई माननीय सभासदों ने पहले ही निर्धनता के बारे में उल्लेख किया है, जो स्वतन्त्रता के 50 वर्षों के बाद भी हमारे देश में व्याप्त है। अत: महोदय, मैं आपसे इस सभा के सदस्यों को कठिन परिश्रम करने और इस देश से निर्धनता को जड़ से उखाड़ने के लिये प्रोत्साहित करने का अनुरोध करता हूं। लोगों को, विशेषकर दूरस्थ गांवों के निर्धन लोगों को, चिकित्सीय सुविधायें प्रदान करने की अतिआवश्यकता है।

अन्त में, महोदय, हमें इस सभा के गौरव और गरिमा को बनाये रखना चाहिये। मैं आशा करता हूं कि आप हमारा उचित मार्गदर्शन करेंगे और सभा की प्रतिष्ठा को बनाये रखने में मदद करेंगे। मैं ईश्वर से आपको साहस और विश्वास का वरदान देने की प्रार्थना करूंगा। मुझे विश्वास है कि आप एक सफल माननीय अध्यक्ष होंगे।

महोदय, मुझे अपने विचार व्यक्त करने का अवसर देने के लिए मैं अपनी पार्टी लोक शक्ति की ओर से, आपको धन्यवाद देता हूं और इन्हीं शब्दों के साथ अपना अभिकथन समाप्त करता हूं।

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्यों, मैं हृदय से आप सभी को बारहवीं लोकसभा के लिए निर्वाचित घोषित होने पर बधाई देता हूं। मैं विशेष रूप से, आप सभी को जनतंत्र की सही भावना से चुनाव में भाग लेकर लोकतंत्र को सुदृढ़ करने के लिये आपका अभिनंदन करता हूं।

मैं उन सबका भी अभिनदंन करता हूं, जिन्होंने चुनाव में भाग लिया, किन्तु वे इस सभा के सदस्य नहीं बन पाये, क्योंकि उनका योगदान भी कम नहीं है। यह समय चुनावी प्रतिद्विन्द्विता की समृतियों को पीछे छोड़कर उन लोगों, जिन्होंने हमें जनादेश प्रदान किया है, की अपेक्षाओं को सजीव रूप देने के लिये संयुक्त रूप से कार्य करने का है।

मैं आभार व्यक्त करते हुये विनम्रता पूर्वक 12वीं लोक सभा के अध्यक्ष का पदभार गृहण करता हूं। मैं यह सम्मान प्रदान करने के लिये ईमानदारी से माननीय सदस्यों का धन्यवाद करता हूं। मैं आशा करता हूं कि सभी माननीय सदस्यों के सक्रिय सहयोग से मेरा कर्तव्य-भार मांग को कुछ हल्का हो सकेगा।

हमारा देश जिस सामाजिक — राजनैतिक बदलाव से गुजर रहा है, मुझे सदस्यों को उसकी याद दिलवाने की आवश्यकता नहीं है। कुछ वर्षों के दौरान, इस पावन सभा के गठन में भी रचनात्मक पविर्तन हो रहा है, जो सामाजिक — राजनैतिक बदलाव को परिलक्षित करता हैं इस पावन सभा ने मिले हुए जनादेश को सदैव माननीय सदस्यों के माध्यम से पूर्ण निष्ठा से परा करने का प्रयास किया है। में 12वीं लोक सभा के गठन के प्रति और उससे की जाने वाली अपेक्षाओं के प्रति विशेष रूप से सचेत हूं। हमारे लोकतंत्र ने सफलतापूर्वक कई चुनौतियों का सामना किया है। यह पावन सदन समय की कसौटी पर खरा उतरा है और जनतांत्रिक और सामाजिक मूल्यों और संविधान की भावना को बनाये रखने वाले अग्रणी संस्थान के रूप में उभरकर सामने आया है।

प्रिय सदस्यगण, बारहवीं लोकसभा को, यह जनादेश, प्राप्त हुआ है। कि वह हमारे देश को आगामी शताब्दि में ले जाये। इस पावन सभा को यह अद्वितीय जिम्मेदारी सौंपी गयी है। संघ के विधान-मण्डल में भागीदार के रूप में और उसके विशिष्ट सदस्यों के रूप में, हमें इस संकट के समय महत्वपूर्ण जिम्मेदारी निभानी है। स्वतन्त्रता के पश्चात् से, हमारे देश ने काफी महत्वपूर्ण उपलब्धियां प्राप्त की हैं और अभी बहुत-सी प्राप्त करनी शेष है। विधान-मण्डल परिवर्तन लाने का प्रभावी माध्यम है। परिवर्तन की प्रक्रिया शुरू करने और अपने राष्ट्र को सही दिशा प्रदान करने में माननीय सदस्यों को महत्वपूर्ण भूमिका अदा करनी है। यह सुनिश्चित करना हमारा पावन कर्तव्य है कि जनता और सरकार की रचनात्मक ऊर्जा का उपयोग हमारे देश की जनता की आकांक्षाओं को पूरा करने में लगे।

माननीय सदस्य गण, इस सम्मानीय सभा के पीठासीन अधिकारी के रूप में जो जिम्मेदारी मुझे सौंपी गई है, मुझे उसका पूरा ज्ञान है। मेरा हमेशा से सामूहिक विवेक से कार्य करने में विश्वास रहा है। इसी विश्वास से मुझे अपने कर्तव्यों का निर्वहन करने में हमेशा मदद मिलेगी। मेरे पूर्व योग्य अध्यक्षों के महत्वपूर्ण योगदान के कारण "अध्यक्ष" के पद ने महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया है। माननीय सदस्यगणों के सामूहिक विवेक के आधार पर कार्य करने से नई चुनौतियों का सामना करने के साथ-साथ परम्पराओं और उच्च प्रथाओं से एक संस्था ने शक्ति अर्जित की है। इस सम्बन्ध में मैं अपने योग्य पूर्वाध्यक्ष श्री पी०ए० संगमा को विशेष तौर पर याद दिलाना चाहूंगा उनकी सद्‌भावना और परामर्श मेरे लिए शक्ति का स्रोत होंगे।

मेरे विचार से, पीठासीन अधिकारी इस सभा के पहले और अंतिम सदस्य की भांति ही महत्वपूर्ण है। इस सम्मानीय सभा की नये सदस्यों को ढालने तथा उनके मार्गदर्शन हेतु वरिष्ठ सदस्यों का बृहद अनुभव उपलब्ध होगा। सामूहिक कल्याण के लिए सहयोग की भावना ही लोकतंत्र का मूलतंत्र हैं मेरा सदैव यह प्रयास रहेगा कि यह भावना सदैव मौजूद रहे। मैं सच्ची लोकतांत्रिक परम्पराओं को बनाये रखने और इस सम्मानीय सभा तथा इसके सदस्यों के विशेषाधिकारों की रक्षा करने का भरसक प्रयास करूंगा। संसद हमारे राष्ट्र की चेतना है और यह भारत के लोगों की सर्वोच्च इच्छा भावना शक्ति की प्रतीक है। संसद का अंग होने के नाते इस सम्मानीय सभा तथा इसके माननीय सदस्यों की बहुआयामी जिम्मेदारी हैं। मैं यह सुनिश्चित करने का भरसक प्रयास करूंगा कि इन दायित्वों का यथासंभव सर्वोत्तम ढंग से निर्वहन किया जाये। पीठासीन अधिकारी हमेशा न्याय और सच्चाई की भावना से कार्य करता है।

मैं माननीय सदस्यों द्वारा मेरी मुक्तकण्ठ से प्रशंसा करने और उनके द्वारा सहयोग के लिए आश्वास्त किये जाने के लिए मैं उनका आभार व्यक्त करता हूं। संसद द्वारा स्वीकृत स्वर्ण जयंती संकल्प में निहित आदर्शों और लक्ष्यों को प्राप्त करने में सतत सहयोग देने हेतु विशेष रूप से इस सभा के नेता और प्रधान मंत्री, श्री अटल बिहारी वाजपेयी, विपक्ष के नेता, श्री शरद पवार और सभी सदस्यों के सहयोग की कामना करता हूं।

कोई संस्था उतनी ही अच्छी हो सकती है जितनी अच्छी सदस्य उसे बनाना चाहे। हमें नये मानदंड स्थापित करने तथा कर्तव्यनिष्ठा के उच्च स्तर पर पहुंचने के लिए समवेत प्रयास करने होंगे ताकि हम अपनी अपेक्षाओं के अनुरूप कार्य कर सकें। आइये हम सभी आगामी सहस्राब्दी में नये युग की शुरूआत के लिए एकजुट होकर प्रयास करें।

यह सभा कल 25 मार्च, 1998 को राष्ट्रपति के अभिभाषण के आधे घंटे बाद पुन: समवेत होने के लिए स्थगित होती है।

अपराह्न 6.46 बजे

तत्पश्चात लोक सभा बुधवार, 25 मार्च, 1998/4 चैत्र, 1920 (शक) को राष्ट्रपति के अभिभाषण के आधे-घंटे बाद तक के लिए स्थगित हुई।

पी० एल० एस०—48/1/2/98 (एन०)

220

© 1998 प्रतिलिप्यधिकार लोक सभा सचिवालय

लोक सभा के प्रक्रिया तथा कार्य संचालन संबंधी नियमों (आठवां संस्करण) के नियम 379 और 382 के अंतर्गत प्रकाशित और इंडियन प्रेस, नई दिल्ली-110035 द्वारा मुद्रित।